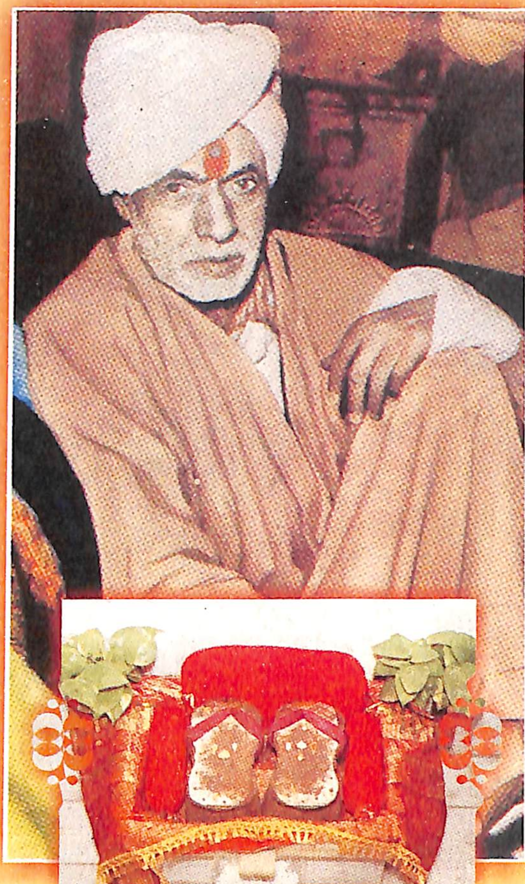
गुरु चरणामृत

The Nectar of the Guru's Feet



लेखक : रमेश सपरु

।। ॐ नमो भगवते गोपीनाथाय ।।

गुरु चरणामृत

The Nectar of the Guru's Feet

लेखक : रमेश सपरु

प्रकाशक: भगवान गोपीनाथजी ट्रस्ट,
खरयार, हब्बाकदल, श्रीनगर (कश्मीर)
उदयवाला, बोड़ी, जम्मू।
पम्पोश एन्क्लेव, नई दिल्ली।

प्रथम संस्करण जुलाई 2003
लेखक : रमेश सपरू
मूल्य : 20 रुप्ये
डी०टी०पी : रिंकू कौल (2595136)
मुद्रक : जे. के. आफसट, नई दिल्ली

संदर्भ

* भगवान की इच्छा प्रबल है

* भक्ति का क्या कीजिये !

भाग—१
हिन्दी कविताएँ

भाग–2

कॉशरि आराधनायि

कॉशुर पॉरिव लीखिव यिथ पॉठ्य्

कॉशिर्य अछर : क, ख, ग, च, छ, च़, छ़, ज, ज़, ट, ठ, ड, त, थ, द,
न, प, फ, ब, म, य, र, ल, व, श, स, ह, क्ष, ज्ञ, त्र।

कॉशिर्य स्वर : अ, आ, ॲ, ऑ, इ, ई, अॖ, अॗ, ए, ऎ, ओ, ऒ, व्व, य्।

स्वर	मात्रा	वरताव
अ	मूलस्वर	अख (एक), अज़ (आज), मस (बाल), बर (दरवाज़ा), कन (कान)
आ	ा	आश (आशा), आव (आया), सास (हज़ार), माम (मामा), नाव (नाम)
ॲ	ॅ	ॲछ (आंख), ॲड (आधी), च़ॅर (चिडिया), मॅछ (मक्खी), लॅर (मकान)
ऑ	ॉ	ऑस (मुंह), ऑल (इलायची), ऑठ (आठ), दॉन (अनार), मॉज (माता)
इ	ि	यि (यह), यिम (ये), छि (हैं), ज़िठ (बडी), ज़ि (कि), दिस (देदो)
ई	ी	ईद, टीन (पीपा), शीन (बर्फ), सीर (ईंट), मीच़ (नाप), तीज़ (तेज)
अॖ	ॖ	च़ॖ (तुम), ज़ॖ (दो), तॖ (और), सॖच़ (दरज़ी), टॖख (दौड), बॖ (मैं)
अॗ	ॗ	तॗर (सर्दी), ज़ॗज़ (दो दो), च़ॗन (चूरा), कॗमथ (कीमत), कॗर (क्रूर)
उ	ु	हु (वह), छु (है), कुस (कौन), कुठ (कमरा), गुर (घोडा)
ऊ	ू	कूर (कन्या), हून (कुत्ता), दूर (दूर), ठूल (अंडा), चूर (चोर)
ए	े	हेर (सीढ़ी), नेर (निकल जाओ), च़ेर (देर,खोबानी), तेल (तिल)
ऐ	ै	मे (मुझे), च़े (तुझे), चे (पी लो), शे (छः), त्रे (तीन), बेयि (और)

ओ	ो	मोल (पिता), लोल (प्यार), चोन (आपका), च़ोर (चार), ज़ोल (जलाया)
ऑ	ॉ	ऑर (अच्छा), ऑड (आधा), ऑन (अंधा), कॉंड (कांटा), बॉड (बडा)
अं	ं	अंद (अंत), दंद (दांत), कॉंड (कांटा), मंज़ (में, अंदर), कांड (भूसा)
य	य्	ब्याख (दूसरा), म्योन (मेरा), ख्यन (खायेंगे), र्‌यथ (मास)
	य	ऑस्य् (हम), चॉरय् (मूर्ख), ऑन्य् (अंधे), खॉस्य् (कांसी के प्याले) पॅक्य् (चले), हॅल्य् (टेढ़े), ज़ॉर्‌य (जुवारी), बॉय (भाई), छ़ॉग्य् (बोधियां)
व	्व	द्वद (द्वद, दूध), स्वख (सुख), ब्वद (बुधि), स्वन (सोना), फ्वख (फूंख), ग्वर (गुरु), व्वश (आह), क्वंग (केसर)

ब्यतस थॅविव :

खास नावन सुत्य ह्यकव ऑस्य् संस्कृत या हिन्दी शब्दुय वर्तॉविथ।।

ब्यनती :

कॉशुर येत्यथ ति आसि तस पज़ि पनुनिस गरस मंज़ पनुन्यन शुर्‌यन बॉच़न सुत्य कॉशरी पॉठ्य कथ बाथ करुन्य् तिक्याज़ि :

कॉशर्‌यो कॉशुर छे प्रज़नथ चॉनी।
तमि वरॉय कुस सना ज़ानी च़ेय।।
'सॉयिल'

आरती सत् गुरु की

नमो सदगुरुं सच्चिदानन्द स्वरूपं।
नमो सदगुरुं ज्ञानदाता अनुपम।।
नमो सदगुरुं सत् स्वरूपं विकासम्।
नमो सदगुरुं भानुवत सुप्रकाशम्।।
नमो सदगुरुं बुद्धि-विद्या-प्रदाता।
नमो सदगुरुं सृष्टिकर्ता विधाता।।
नमो सदगुरुं वेद ब्रह्मा स्वरूपं।
नमो सदगुरुं भूप भूपानु भूपम।।
नमो सदगुरुं काल कालं करालम।
नमो सदगुरुं भक्त मानस मरालम।।
नमो सदगुरुं दास पापं प्रहारी।
नमो सदगुरुं निर्गुणं निर्विकारी।।



भगवान की इच्छा प्रबल है

भगवान की इच्छा प्रबल है। वे जो भी चाहते हैं जैसे भी चाहते हैं, उसमें सदा ही लोकहित गुप्त होता है। अपने भक्तों को पहचानने में उनका अपना तरीका होता है। सच्ची लगनवाले भक्त को तुरंत अपनाते हैं। उनपर अपनी दया दृष्टि डालने में तनिक संकोच नहीं करते। यही कारण है कि जगत गुरु भगवान गोपी नाथ जी के भक्तों की संख्या जहां तहां समस्त संसार में बढ़ती ही जाती है। इसमें अश्चर्य यह है कि स्वदेश की तो अलग बात थी अब विदेशों में भी आश्रमों का निर्मान होता है। यह बात किसी से छुपी नहीं है। आशा है यह सिलसिला चलता रहेगा। कहने का तात्पर्य है इस "चरणामृत" नामी पुस्तक तथा इसके लेखक भगवान जी के भक्त श्री रमेश सपरू के बारे में एक दो शब्द कहना।

श्री सपरू बहुत अल्पायु से ही धार्मिक प्रवृति के युवक हैं। अपने विद्यालय तथा महाविद्यालय के दिनों से ही आपके मन में शुद्ध वासनाओं तथा शुद्ध विचारों को जगह देने लगे। शिव शंकर के उपासक अष्ट भैरवों के उपासक तथा शैवमत के रहस्यों तथा मूल सिद्धान्तों की खोज में विशेष रुचि रखते हैं।

"येमी योत कॅर कल तु कॅहर,
सु तथ शहर वॉतिथ ᵀमव"

अर्थात जिस व्यक्ति ने जिस वस्तु की चाहना, अपनी तीव्र इच्छा, लगन तथा भावना से की, उसे वह लक्ष्य अवश्य मिला। इसके लिये अनथक प्रयास, तथा खोज की आवश्यकता होती है। परिश्रम का फल मीठा ही होता है।

कहने का अभिप्राय यह है कि "गुरु चरणामृत" नाम वाली इस पुस्तक के लेखक रमेश सपरू जी पर ईश्वर के साथ साथ तीव्र इच्छा तथा सच्ची लगन भी है। आप मानव कल्याण के बड़े इच्छुक हैं। यह तड़प आप में बालक अवसथा से ही मौजूद थी। सपरू जी सभी बातों पर से पर्दा उठाना नहीं चाहते हैं, भगवान जाने वह किन कारणों से इन को स्पष्ट करने से हट कर रहते हैं, परन्तु उन्होंने बडे आध्यातमिक अनुभव किये हैं। क्रिया के रूप में अच्छे सच्चे भक्त तथा शिक्षार्थी बनकर उभर आये हैं, व्यक्तिगत रूप में अपनी खोज के शुभ परिनाम पा चुके हैं। खैर घरके स्वच्छ तथा धार्मिक वातावरण तथा अपने सम्बंधी सत्जनों की संगति इत्यादि से अच्छी प्रेरणा पाई। श्री सपरू अपने इस शरीर को शिव मंदिर मानते हैं। विशेषता आप का शिव भक्ति की ओर काफी झुकाव है।

आप की जीवन सम्बन्धित जानकारी का यहां पर उल्लेख करना पाठकों के लिए अनिवार्य समझता हूँ। श्री सपरू का समवत् 1953 ई॰ के अषाड मास के कृष्णा पक्ष की 9वीं तिथि पर अपने स्व॰ पिता पंडित सतलाल सपरू के घर श्रीनगर के मुहल्ला नरपीरस्तान में जन्म हुआ। स्व॰ पंड़ित सतलाल राजकीय पुलिस विभाग में कर्मचारी थे। धार्मिक कार्यों में आपकी बड़ी रुचि थी। दैव इच्छा से आप 23 वर्ष की आयु में ही रहस्यमय आध्यात्मिक अनुभवों से गुज़रे, जिन में आत्म साक्षातकार सब से प्रमुख है। इन अनुभवों को समझने तथा किसी भाषा में व्यक्त करने के लिये आप को धामिर्क ग्रन्थों, रहस्यवाद की पुस्तकों तथा संत जीवनियों का आध्ययन लगभग सात वर्षो तक करना पडा। इन अनुभवों का उनके जीवन पर इतना गहरा असर पडा कि इन्होंने राजकीय नोकरी से भी त्यागपत्र दिया। परन्तु अपने पिता जी तथा मित्रों इत्यादि के अनुरोध पर त्यागपत्र वापस लिया।

श्री सपरू आजकल, श्रीनगर कश्मीर से पलायन करने के पश्चात तालाब तिल्लू बोरी, जम्मू में निवास करते हैं, और केन्द्रीय दूरसंचार विभाग में ए॰ ई॰ के पद पर काम कर रहे हैं।

सम्वत् 1983 ई॰ से बराबर आप भगवान शिव जी तथा मंगलेश्वर भैरव की भक्ति में तनमयता से जुटे

रहे। इस कारण आप शिव महिमा तथा शैव दर्शन के रहस्यों को ढूंढ निकालने में दिलचस्पी से लगे रहे। आप इस फलसफा में डूब कर अपनी मनोकामना को पूर्ण करने का बेड़ा उठाये हुए हैं। इसके लिए आपने काफी अध्ययन किया और करते रहे हैं। एक अच्छे साधक के ढंग से आप इन के मूल्यों को जानने में प्रयत्नशील हैं। भक्तिरस में मस्त रहकर आपने अधिकाधिक मूल्यों का ज्ञान प्राप्त किया है। मानव कल्याण तथा समाज सेवक के नाते आप प्राप्त हुई जानकारी को अपनी बिरादरी में श्रद्धालु व्यक्तियों तक भी पहुंचाना अपना कर्तव्य मानते हैं। अतः आपने भक्ति के उचित सिद्धदांतों, क्रिया प्रणालियों से तथा शिव शंकर और शैवमत से सम्बंधित मुख्य् बातों को अपनी तीन पुस्तकों में प्रकाशित करके एक उल्लेखनीय काम किया है। जो आपने इस पुस्तक से पहले ही पाठकों को भेंट की हैं। ये बहुमूल्य् पुस्तकें अंग्रेज़ी भाषा में लिखी गई हैं। इस छोटी सी आयु में आप का यह प्रशंसक कार्य आपकी बुधिमता, भक्ति, तथा श्रद्धा का प्रमाण हैं। इस कार्य से इन बातों के अतिरिक्त आपकी क्षमताओं, ज्ञान तथा सफलता की भी जानकारी मिलती है। आपकी ये किताबें निम्नलिखित हैं :—

1. Kashmir & Lord Shiva's worship.
2. Introduction to Maha Shiv Purana.
3. Hints to God seekers.

आध्यात्माकि ज्ञान के अथाह तथा अन्नत सागर में छलांगें मारने तथा ज्ञानरूपी अमृत के उगलते स्रोत तथा चशमों में गोते लगाते श्री सपरू के कानों में भी लल्लेश्वरी के कहे गये इस वाक्य् की ही ठीक भांति अन्तर आत्मा के शब्दों की सुरताल तथा गूंज आने लगी और आपके मन में भी कुछ गुनगुनाने की इच्छा जोश खाने लगी। लल्लेश्वरी ने अपने वाक्य् में इस प्रकार अपने अनुभव को दर्शाया है :—

(कश्मीरी)

स्व मनु गॅयस बॅ तस कुनुय,
बूज़ुम सतुच गंटा वज़ान।
तथ जायि धारणायि धारण रॅटुम,
आकाश तु प्रकाश कोरुम सरु।।

अर्थात जब मैं ईश्वर की ओर सच्चे मन तथा सच्ची भावना से गई। मैं ने वहाँ सत्य् की घंटायें बजती सुनीं। मैं ने उसी स्थान से धारणा को धारण किया और आकाश तथा प्रकाश के असली स्रोत को देखा परखा।

भगवान शिव तथा मंगलेश्वर भैरव की भक्ति करने के दौरान ऐसा शुभ अवसर आया कि श्री सपरू को जगदगुरु भगवान गोपीनाथ जी के चरण कमलों में उपस्थित होने का आदेश मिला। पता चला है कि भगवान गोपी नाथ जी ने श्री रमेशजी को व्यक्तिगत

रूप से दीक्षा दी है। इस से भगवान जी के कालातीत होने का संकेत मिलता है। यह संयोग था समवत् 1980 ई० का तब से बराबर वे प्रतिदिन भगवान जी के आश्रम वयखुरीयार श्रीनगर में उपस्थित होते रहे। जैसा मैं ने ऊपर बताया कि 23 वर्ष की आयु में ही श्री सपरू ने अपने गीत भजन गुनगुनाना आरम्भ किया। गायन में इनकी रुचि थी। उन्हीं दिनों उन्होने भगवान गोपीनाथ जी की भक्ति में बहुत सारे भजन लिखे। आजकी इस पुस्तक में आधी संख्या उसी समय के भजनों की है।

भगवान जी के उदयवाला, जम्मू आश्रम में भी आप बराबर आते रहें हैं। इस आश्रम के कार्यों में बड़े सेवाभाव, ज्ञान तथा श्रद्धा से जुट जाते हैं। प्रत्येक रविवार को सांध्य आरती से पूर्व आप सविस्तार भक्तजनों तथा चाहने वालों के सत्संग बुलाते रहे हैं जिन में आप उनको अपने प्रवचनों के माध्यम से श्री मद्भगवद्गीता के मूल सिद्धांत, कर्तव्य पालन तथा कर्म के विषय में आवश्यक जानकारी, लल्लेश्वरी के बहुमूल्य् वाक्यों की व्याख्या, भगत कबीर के दोहों की रोशनी में इन्सानियत, मानव धर्म, आध्यात्मिक ज्ञान, धर्म तथा भक्ति के स्वर्ण सिद्धांत के मुख्य् बिन्दु की व्याख्या अपने भजनों के भावात्मक गायन के अतिरिक्त गुरु गीता का पाठ बड़ी श्रद्धा नियम अनुसार नित्य करते हैं।

जहाँ तक कविता का सम्बंध है। श्री सपरू गद्य में अपने उचभाव प्रकट करते हैं। परन्तु काव्य् कला के भी अपने दायरे हैं। अपना व्याकरण है। अपनी पदती प्रणाली है, अपने असूल हैं।, जिनको धीरे धीरे कवि स्वंयएव सीख जायेंगे। क्योंकि अभी तो इनका यह पहला पहला प्रयास है। अभ्यास से सब कुछ जान लेंगे। फिर भी यह सफल प्रयास है। देखना यह है कि अपने भजनों इत्यादि में कितनी सुन्दर तथा योग्य बातें मिलती हैं। कितने उच तथा शुद्ध विचारों का उल्लेख किया गया है। भक्तों के मार्गदर्शन की कितनी आवश्यक बातें कही गई हैं। ये सभी बहुमूल्य हैं। इसी कारण मेरे अनुमान से श्री सपरू भक्त अधिक और कवि कम हैं। पुस्तक में शामिल रचनायें पढ़ कर ही अध्ययन का आनन्द आता है। पुस्तक में शामिल रचनायें पढ़कर ही अध्ययन करना उचित समझता हूँ।

1. (क॰) भगवान जी के विषय में एक बार कहते हैं:

रुद्र रूपुच छय चॆ प्रॖती,
अष्ट भैरव छिय चॆ सॖती।
भगवान शंकर सुंज़ छय प्रॖती।।
रुद्र रूपु टाठि भगवानो।।०।।

अर्थात हे भगवान आपको रुद्र रूप की बड़ी चाहना है। और अष्ट भैरव भी आपके साथ ही हैं। भगवान शंकर का भी आपको प्यार है। भगवान जी आप स्वयं

भी रुद्र रूपी हैं।

2.(क०) "'यि बु' वाले भजन में कहते हैं :"

यि बु संसारुक छुय बडि खोतु बोड भ्रम,
बेमार मनस रॅटिथ जन शाँश तय तम।
यि बु त्रॉविथ छ्वन्यर चोनुय गछ़ी कम।।
पूरणतायि मंज़ व्वलुसक चु क्षन क्षन।।०।।

अर्थात इस संसार के मानव में (बु) 'मैं' ही एक बड़ा भ्रम है। केवल ज्ञान के प्रकाश से ही यह (मैं) मिट सकता है। इसी ज्ञान रूपी ज्वाला से शारीरिक रोग भी दूर हो सकते हैं। और इसी (मैं) अहं को छोड़ कर आपमें पाये जाने वाली कमी पूर्ण होजायेगे।

3. (क०) ॐ नमो भगवते गोपी नाथाये,
ग्वरु महिमा चोन ग्यवुने आये।
ग्वरु महिमा चोन, ग्वरु गीता चॉन्य्।।
ग्वरु गीता चॉन्य् ग्यवने आये।।०।।

अर्थात हे भगवान गोपी नाथ आपको नमन करता हूँ। हम आपकी महानता तथा गुरू महिमा का गान करने आये हैं, आपके गुरु महिमा तथा आपकी गुरु गीता को गाने की श्रद्धा से आये हैं।

4. (क०) परसॉ गुरुवे नमः सत् गुरुवे नमः।
सत् गुरुवे नमः परम गुरुवे नमः।।

अर्थात हे भक्तो गुरुवे नमः परम गुरुवे नमः पढ़ो! सत् गुरुवे नमः तथा परम गुरुवे नमः पढ़ो। गुरु का नाम

बडे प्यॊरि से ज़पने की प्रेरणा की गई है।

5. (क॰) पनुनिस ग्वरस प्यठ यछ़ पछ़ थॅव्यजे,
ग्वरु लोंचि च़ु पानय चीरु थफ कॅर्यज़े।
वतु हावुख छु ग्वर नज़रि यिनु डलियो,
नेंन्द्रि व्वथू छुख च़ु भगवान स्परूप ज़ीवो।।

अर्थात कवि कहते हैं हे प्राणी, अपने गुरु पर निष्ठा रखो, विश्वास रखो। गुरु के आंचल को अपने पूरे बल से थामे रखो। क्योंकि गुरु ही पथप्रदर्शक हैं उन की दया दृष्टि में रहिये। इससे दूर कभी नहीं रहना। हे मनुष्य नींद से जागो आप तो स्वयं भगवान का स्वरूप हो।

6. (क॰) 'गुरु दृष्टि' भजन में भक्ति का वर्णन इस प्रकार करते हैं :

कुनी दृष्टी दिल च़ूरि छुख निवान च़्यतुके च़ूरु भगवानो।
कर्मु खुर सोन छुख शेरान, चितशक्ति रूप भगवानो।।

अर्थात हे भगवान आपका अत्यन्त आकर्शक मोहिनी रूप एक दृष्टि मात्र से मन मोह लेता है। हे चित्तचोर भगवान।

7. (क॰) गुरु देव को किस श्रद्धा से प्रणाम भेजते हैं। कहते हैं :

हे गुरु देव आप भगवान स्वरूप हैं।
आप को हमारा प्रणाम पहुँचे।
भावपूर्ण है, प्यार से भरा हमारा प्रणाम।

8. (क॰) पूज़ करुहय च़्यतु सिरियस,
तस अमर साक्षस।
तस निराकार शिवस।।

अर्थात मैं चित् सूर्य की पूजा करों, यही मेरी तीव्र इच्छा है। आप चित्सूर्य हैं अमर हैं साक्ष हैं। आप निराकार हैं, ऐसी हे भगवान शिव मेरी चाहना है। पूर्ण करो।

9.(क॰) माया के बारे ऐसे विचार हैं इनके :

माया वुछिमय च़ूर करान,
अपज़िस पोज़ बासुनावानो।।

अर्थात माया का खेल निराला है। वह सत्य को असत्य् ओर झूठ को सच का अनुभव करवाती है अत: कवि उसे चोर कहते हैं।

10. (क॰) अंतर बाहर के भेद भाव को मिटाने की शिक्षा देते हुए इस पंक्ति में वर्णन करते हैं:

मनुचे दारि बर वॅच़्य् च़ुय त्राव।
अंतर बाहर भेद मॅशराव।।

अर्थात हे प्रेमी अपने मन के द्वार तथा खिडकियां खोल। अंतर और बाहर का भेद भूलजा क्योंकि अंतर बाहर एक होने में ही लक्ष्य प्राप्ति की सम्भावना है।

ग्वरु आत्म दीव वनान भजन में कहते हैं:

शब्द प्रकाश छुय, वति अख पड़ाव म्योन,
शुन्यस मंज़ रूज़िथ प्रकाश विर्मश छुसय बु।

वॉनी क्याह वर्णन करि तस परा वॉनी,
नाद रूप भवानी दिय अव्यक्त ज़ॉनी।

ऊपर इस पुस्तक के भाग (2) अर्थात कश्मीरी भाग के विषय में बात चल रही थी लीजिये अब इसके पहले भाग की विशेषता तथा मूल्यांकण की बात करते हैं।

इस पुस्तक का पहला भाग हिन्दी रचनाओं का है। इस में हिन्दी भजन तथा प्रार्थनाएँ हैं। लेखक इस विचार से सहमत हैं कि भगवान जी से सम्बन्धित अधिकाधिक रचनाओं को कश्मीरी में ही रचा गया है। परन्तु जम्मू कश्मीर से बाहर तो भगवान जी के भक्तों की बड़ी संख्या मौजूद है और यह संख्या दिन पर दिन बढ़ती ही जा रही है। इसी कारण लेखक हिन्दी भाषा में अधिकाधिक रचनायें लिखने का प्रयास कर रहे हैं। उसी से हमारे गुरु महाराज के संदेश दूर दूर तक पहूँचेंगे। यह सोच तो प्रशंसुनीय है।

कुछ हिन्दी रचनाओं के से :—

1. भक्तों को खुद बुलाकर कल्याण कर रहे हो।
   अन्त:करण भक्तों के, शुद्ध आप कर रहे हैं।।
2. क्या घोर हैं पाप अपने, हम दो में दीवार जो बने,
   पाप और पुण्य कर्मो को खुद जोड़ के सम करना।
   असंख्य पाप हो तो अगर, उन सब को माफ करना,
   गुरु देव दया करना, चरणों में जगह देना।।
   हम द्वार पै खड़े तेरे, गुरु द्वार खुला देना।।०।।

3. इक भक्त से आप बने भगवान,
सत्‌गुरु तेरी जय जय कार।
जग त्याग दिया, देह त्याग दिया,
छोड़ा नहीं भक्तों का प्यार।।

4. द्वेष घृणा से जीव खोये आराम,
भाग जायें घर से देवता तमाम।
स्मरण में कैसे लगे मन और प्राण।।
सत्गुरु प्रेम ही आप का नाम।।0।।

5. सिर के ऊपर आसन से अमृत छिडक रहे हो।
दिव्य शक्ति के प्रवेश से शक्ति पात कर रहे हो।।

6. संकट की आँदियों में, भक्तों को थाम रहे हो।
रिशता भक्त भगवान का आप खुद निभा रहे हो।।

7. माँ बाप भाई का रिशता केवल इस शरीर से जुड़ा,
गुरु देव का अमर रिशता इक आत्मा–आत्मा से जुड़ा।
दर्शन देकर संकट में यह रिशता निभा लेना,
गुरु देव दया करना चरणों में जगह देना।।0।।

वैष्णों भवानी की कविता कहानी भजन में कहते हैं:–

8. शब्द ध्वन की तुम रानी, ऐ शब्द ब्रह्मनी।
हर जीभ पर तुम हो वाणी, ऐ माँ परावाणी।।

9. तीन कारणों की शक्ति तुमी हो महागायत्री।
कलियग में तुम प्रकटी युग शक्ति माँ भवॉनी।।

माँ दर्गा के दूसरे भजन में लिखते हैं :–

10. यह कुदरत तेरा हि रूप, मूल प्रक्रती का स्वरूप।
शितल सरस्वती स्वरूप विक्राल काली का रूप।।
तुम महा लक्ष्मी पालनहारी।
दर्शन देदे ऐ दुख हरनी।।

गुरु दरबार में कैसे आये भजन में कहते हैं :–

11. कई जन्मों से ढूँड के हम गुरु के द्वार पहुँचे हैं।
अगर सच मान लेंगें हम वहीं हम को बुलाए हैं।।
12. कृपा दृष्टि में सतगुरु की विधाता की है सहमती।
बुलंदियाँ क्यों न छू जाये, नज़र में तेरे आये हैं।।

अन्त पर मैं यही कह देना चाहता हूँ कि श्री सपरू बड़े अच्छे भक्त हैं। गुणवान, लेखक, कवि, गायक और समाज सेवक हैं। अपनी खोज, तथा भक्ति की राहें ढूंढना इन्होंने बराबर जारी रखा है। आजकल आप भगवान गोपी नाथ जी का अष्ट भैरवों के साथ समपर्क तथा सम्बंध मालूम करने में तनमयता से लगे हैं। इसी कारण लिखा 'भक्ति का क्या कीजिये' यह पुस्तक इसका प्रत्सक्ष प्रमाण है। मेरी आशा है कि इस पुस्तक को सभी पढ़ेंगे तथा पसंद भी करेंगे। मेरा आशीर्वाद है कि सपरू साहिब के सारे सपने सफल हों! इनकी यही प्रवृति अंत तक बनी रहे। भगवान जी इनकी लेखनी को बल दे! इन्हें रुम ऋषि की सी

दीर्घायु मिले और उन्नति के शिखर पर पहूँचे!

अन्त में श्री रमेश जी भगवाण गोपी नाथ ट्रस्ट के सदस्यों का आबार प्रकट करना चाहते हैं, जिन्होंने उन का उत्साह बड़ाया। विशेष रूप से वह श्री रतनलाल जुतशी, जोकि भगवान जी आश्रम के पुजारी हैं का आबार प्रकट करना चाहते हैं। इन्होंने इन बजनों को संगीत और सुर में डालने में सहायता कि है।

ॐ शान्ति ॐ।।

पृथ्वी नाथ कौल 'सायिल'

जम्मू 16 जून 2003ई॰



भाग – 1
हिन्दी – कविताएँ



भगवान (गुरु) ही कर्ता है

तेरे होने से गुरु देवा शुभ काम हो रहा है।
करते हो तुम गुरु देवा, नाम किसी का लग रहा है।।

संकल्प शुद्ध मन में, अनुग्रह से उठ रहे हैं।
प्रेरणा तेरी होने से, यह शरीर उठ रहा है।।

तेरे चाहने से गुरु देवा, सब भोग चढ़ रहे हैं।
हाथ अपना इसे लगा कर, अमृत बना रहे हो।।

भक्तों को खुद बुला कर, कल्याण कर रहे हो।
अन्त:करण भक्तों के, आप शुद्ध कर रहे हो।।

स्मरण खुद अपनी देकर, नाम दान दे रहे हो।
भक्तों के शुभ कर्मों में, खुद रंग ला रहे हो।।

सेवा खुद अपनी देकर, गुरु कृपा कर रहे हो।
कर्ता का अंह तौड़ कर, भगवान से जोड़ रहे हो।।

संकट की आँधियों में, भक्तों को थाम रहे हो।
रिश्ता भक्त भगवान का, आप खुद निभा रहे हो।।
or (मर्यादा भक्त भगवान की, आप खुद बचा रहे हो।।)

भावना दान पुण्य की, दिल में जगा रहे हो।
गिरते हुए गरीब को, आप खुद उठा रहे हो।।

दीप्तिमान आत्मा के रूप में, हृदय कमल में बैठे हो।
हड्डियों का यह ढाँचा, माया वश घूम रहा है।।

सिर के ऊपर आसन से अमृत छिडक रहे हो।
दिव्य शक्ति के प्रवेश से शक्ति्—पात कर रहे हो।।

अन्तरात्मा के रूप में, आप खुद ही बोल रहे हो।
माया के अंधकार में, गुरु शब्द सुन रहे हैं।।



नाहं वसामि वैकुण्ठे योगिनां हृदये न च।
मद्भक्ता: यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद।।

The Lord says,
O Narada:

"I do not permanentlly dwell in the Vai Kunth heaven. I also do not dwell in the hearts of Yogis. wherever my devotees sing of me with devotion, I am there."

गुरु वन्दना

गुरु देव दया करना, चरणों में जगह देना,
हम द्वार पे खड़े तेरे, गुरु द्वार खुला देना।
गुरु देव दया करना, चरणों में जगह देना।।
चरणों में जगह देना, चरणों में सदा रखना।।०।।

दुनिया के रंग रूप में, कही खो ना जायें हम,
तब दूर नज़र रखना, माया से बचा लेना।
इस शरीर की यात्रा में, कभी साथ नही छोड़ना।।
गुरु देव दया करना, चरणों में जगह देना।।०।।

क्या घोर हैं पाप अपने, हम दो में दीवार जो बने,
पाप और पुण्य कर्मों को खुद जोड़ के सम करना।
असंख्य पाप हों तो अगर, उन सब को माफ करना।।
गुरु देव दया करना, चरणों में जगह देना।।०।।

कलि युग में जप कीर्तन, सन्तों ने श्रेष्ठ माना,
ज्ञान बुद्धि देकर, सत कर्मों में आप लगा देना।
समर्पण भाव जगा के, जो ठीक लगे करना।।
गुरु देव दया करना, चरणों में जगह देना।।०।।

संसार में जन्म से मरन तक इस जीव की कभी न चली,
कर्मों की गति में शक्ति, दैवी इच्छा ही प्रबल सही।
कर्मों की किताब में नया लेख, शुभ हाथों से लिख लेना।।
गुरु देव दया करना, चरणों में जगह देना।।० ।।

माँ, बाप, भाई का रिश्ता केवल इस शरीर से जुड़ा,
गुरु देव का अमर रिश्ता, इक आत्मा—आत्मा से जुडा।
दर्शन देकर संकट में, यह रिश्ता निभा लेना।।
गुरु देव दया करना, चरणों में जगह देना।।० ।।



बब भगवान हैं दयालु

बब भगवान हैं दयालु, भजों मन गुरु चरणम्।
गुरु चरणम् भजों, गुरु चरणम्, गुरु शरणम् सत् गुरु शरणम्।
सत् गुरु दीन दयालु, भजों मन गुरु चरणम्।।०।।

ध्यान मुद्रा में बैठे शिव स्वरूप:
मदिरा आनंद की पिलाते सत् गुरु शान्ति स्वरूप:।
बब भगवान हैं दयालु, भजों मन गुरु चरणम्।।०।।

दृष्टि से जन्मों की जीवनी वह पढ़ते,
दृष्टि ही उन की दीक्षा, सत् गुरु शिव स्वरूप:।
बब भगवान हैं दयालु, भजों मन गुरु चरणम्।।०।।

मन में धर्म का बीज वह बोते,
मन की मुराद पूरी करते, सत् गुरु भगवान स्वरूप:।
बब भगवान हैं दयालु, भजों मन गुरु चरणम्।।०।।

क्रोध में छुपी है उन की प्रेम की धारा,
कठोरता में उन की करुणा, सत् गुरु करुणा स्वरूप:।
बब भगवान हैं दयालु, भजों मन गुरु चरणम्।।०।।

चिमटा उठाके वह भय दिखाते,
भक्तों को वह परखते, सत् गुरु कल्याण स्वरूप:।
बब भगवान हैं दयालु, भजों मन गुरु चरणम्।।०।।



भगवान को है भक्तों से प्यार

इक भक्त से आप बने भगवान,
सत् गुरु तेरी जय जय कार।
जग त्याग दिया, देह त्याग दिया।।
छोड़ा नहीं भक्तों का प्यार।।०।।

जहाँ भक्त है वहाँ हैं भगवान,
कह गये सत् गुरु एक बार।
भक्तों की पीड़ा से खोये करार।।
सत् गुरु तेरी जय जय कार।।०।।

संकट मोचन हैं भगवान,
महावीर जैसे हैं महान।
चिरंजीव होने का है वरदान।।
सत् गुरु तेरी जय जय कार।।०।।

हंस के लिया उस का कर्म भार,
शरण में आया जो एक बार।
दिव्य देह से दीक्षा दी कई बार।।
सत् गुरु तेरी जय जय कार।।०।।

शारिका देवी को नमस्कार,
जिस ने दिया आप को साक्षात्कार।
आती थीं माँ शेर सवार।।
सत् गुरु तेरी जय जय कार।।०।।

इस देश पे है आप का उपकार,
संकट को टाला बार बार।
हर युद्ध में धर्म का दिया साथ।।
सत् गुरु तेरी जय जय कार।।o।।

ब्रह्म का कंठ ही है ओंमकार,
कहते थे सत् गुरु बार बार।
ॐ नाद गूंज में है उन का करार।।
सत् गुरु तेरी जय जय कार।।o।।

भक्तों को देखो आयें गुरु द्वार,
दे दो ज्ञान बुद्धि सद् विचार।
भक्ति और मुक्ति करो प्रदान।।
सत् गुरु तेरी जय जय कार।।o।।

गुरु चरणों में मिले चैन करार,
भूल जाये स्वार्थी संसार।
मन के रोगों से हम बीमार।।
दे दो हमें दिव्य उपचार।।o।।

गुरु चरणों में है अलौकिक आनन्द,
मेरा नाम ही करना गोपी आनन्द।
भक्तों के स्वरूप में देखा कई बार।।
सत् गुरु तेरी जय जय कार।।o।।



भगवान जी हैं सब के संगी साथी

भगवान जी सब के संगी साथी।
जुड़े हम न उन से तो वह क्या करें।।

हृदय कमल में बैठे वह सब के।
अन्तर मुख न हम हो तो वह क्या करें।।

श्री कृष्ण—गीता को गुरु वह माने।
समझे न हम उस को तो वह क्या करें।।

परोपकार में लगे वह निरन्तर।
स्वार्थी बने हम तो वह क्या करें।।

भूरवे प्यासे लगे जप तप में।
अशुद्ध आहार से हम मन मलिन कर गये।।

ब्रह्म की खोज में बने सच्चे ब्रह्मण।
ब्रह्मण धर्म को हम भूल गये।।

मौन पालन कर बहुत कम वे बोले।
व्यर्थ बातों में हम बहक गये।।

निष्काम कर्ममार्ग दिखाया था हम को।
अहं भाव से कर्म हम अशुद्ध कर गये।।

मन की शुद्धि में वह सहायक हैं सब के।
वासना के दाग हम मिटा ना सके।।

महाज्योत प्रकाश की हस्ती है उन में।
ॐ नाद ध्वन में वो मस्त हो गये।।

नौ द्वार क़ैदी बन के जिये हम।
शब्द प्रकाश द्वार हम खोल न सके।।



इक प्रेम ही है भक्ति का सार

प्रभु प्रेम जगाने का करते हो काम,
सत् गुरु प्रेम ही आप का नाम।
भक्ति सकाम बनाई निष्काम।।
सत् गुरु प्रेम ही आप का नाम।।०।।

गोपियों में प्रेम जगाने का काम,
करते थे जैसे घनश्याम।
गोपियों के नाथ पड़ा आप का नाम।।
सत् गुरु प्रेम ही आप का नाम।।०।।

परा भक्ति जगाये इक राधा का नाम,
भक्तों के लिए हो श्री कृष्ण राम।
तेरे प्रेम स्वरूप को दिल से प्रणाम।।
सत् गुरु प्रेम ही आप का नाम।।०।।

विश्व प्रेम ही को माना ज्ञान का सार,
जनहित में लगे हो आप सुबह शाम।
ऐसे कर्म योगी को मन से प्रनाम।।
सत् गुरु प्रेम ही आप का नाम।।०।।

इक जीव को जीव से मिलाने का काम,
कर ले प्रेम की अमृतधार।
मन से भगाएं वह घृणा तमाम।।
सत् गुरु प्रेम ही आप का नाम।।०।।

द्वेष घृणा से जीव खोये आराम,
भाग जाएं घर से देवता तमाम।
स्मरण में कैसे लगे मन और प्राण।।
सत् गुरु प्रेम ही आप का नाम।।०।।

राधा के प्रेम से जब प्रकटे घनश्याम,
श्री उद्धव जी छोड़ गए ज्ञान तमाम।
कहा प्रेम में भक्ति शक्ति तमाम।।
सत् गुरु प्रेम ही आप का नाम।।०।।

प्रेम आनन्द की वर्षा तमाम,
करते हैं सत् गुरु सुबह शाम।
खींचते वापस वह आत्मधाम।।
सत् गुरु प्रेम ही आप का नाम।।०।।

महावीर की भक्ति कहे राम राम,
राधा की पीड़ा कहे श्याम श्याम।
एक प्रेम की डोर से बन्धे भगवान।।
सत् गुरु प्रेम ही आप का नाम।।०।।

सहज योग नहीं गुरु भक्ति समान,
गुरु कृपा से मिलता है परम धाम।
दैर्य कर कराते वह अनुष्ठान।।
सत् गुरु प्रेम ही आप का नाम।।०।।

सच्चे प्रेमी को कोई गैर नहीं,
उस को किसी से बैर नही।
इक अमर आत्मा की हम संतान।।
सत् गुरु प्रेम ही आप का नाम।।०।।

भक्तों की भक्ति से बन्धे भगवान,
जप और कीर्तन में आते वह सुबह शाम।
भक्तों के हृदय में छोड़ा निशान।।
सत् गुरु प्रेम ही आप का नाम।।०।।



भगवान कब मिलेंगे ?

जब सच्चे दिल से लगन लगे,
भगवान मिलेंगें कभी न कभी।
स्वप्नों में मिले जाग्रत में मिलें,
देह छोड के मिलेंगें कभी न कभी।।
सुनलो भक्तों की, सुनलो भक्तों की,
हे सत् गुरु गोपीनाथ जी।।०।।

गुरु वाक्य पे जो विश्वास रखे,
गुरु नाम का जो जाप करे।
मन में अपने वैराग्य रखे,
भगवान मिलेगें कभी न कभी।
सुनलो भक्तों की, सुनलो भक्तों की,
हे सत् गुरु गोपीनाथ जी।।०।।

अंतर मुख होकर, जो ध्यान धरें,
मन में प्रभु मिलन की तड़प रखें।
विषय भोगों से खुद को अलग रखें,
भगवान मिलेंगें कभी न कभी।
सुनलो भक्तों की, सुनलो भक्तों की,
हे सत् गुरु गोपीनाथ जी।।०।।

शब्द और प्रकाश द्वार खोल दे,
जन्मों की प्यास बुझा दे।
भक्तों की इच्छा तुम पूर्ण कर,
ऐ सिद्धि दायक योगीश्वर।
सुनलो भक्तों की, सुनलो भक्तों की,
हे सत् गुरु गोपीनाथ जी।।०।।

विश्व प्रेम की दृष्टि जब खुले,
भगवान मिलेगें कभी न कभी।
नर में नारायण जब दिखें ,
भगवान मिलेगें कभी न कभी।
सुनलो भक्तों की, सुनलो भक्तों की,
हे सत् गुरु गोपीनाथ जी।।०।।



सच्चा सुख कहाँ?

मिलता है सच्चा सुख,
केवल भगवान तुम्हारे चरणों में।
भगवान तुम्हारे चरणों में,
सत्‌गुरु तुम्हारे चरणों में।।

मिटता है मन का दुख,
केवल भगवान तुम्हारे चरणों में।
जय हो भगवान की,
जय हो भगवान की,
जय सत् गुरु गोपी नाथ जी।।



दुर्गा माता है दुख हरनी

दुर्गा भवानी, माता भवानी,
दर्शन दे दे हे दुख हरनी।
तुम जग जननी, जगत पालिनी,
तुम सर्व सिद्धि प्रदायिनी।
दर्शुन दे दे हे दुख हरनी।।०।।

शक्ति सहारे बिना शिव तत्व किस ने जाना,
गुरु रूप प्रकट होकर माया से तुम तारना।
तुम गुरु मूर्ती गुरु शब्द रूपी।।
दर्शन दे दे हे दुख हरनी।।०।।

माया वश होकर जो पाप हम से हुये,
अन्धे को करता न मान, यह जग अपनी लीला तू जान।
तुम क्षमाश्वरी हो पाप हरनी।।
दर्शन दे दे हे दुख हरनी।।०।।

बहुत तड़पाया तुम ने बहुत रुलाया तुम ने,
अब और परीक्षा न ले, हे जग तारिणी।
थके हुए में विश्वास जगाती।।
दर्शन दे दे हे दुख हरनी।।०।।

शब्द प्रकाश द्वार खोल, भक्तों से मुँह ना मोड़,
नौ द्वार बन्द कर के, ब्रह्म द्वार तू खोल।
ॐ शब्द रूपी महा ज्योत स्वरूपा।।
दर्शन दे दे हे दुख हरनी।।० ।।

मेरी इच्छा को तुम अपनी ही इच्छा मान,
शिव दृष्टि करले प्रदान, अभिन्नता का दे वरदान।
तुम इच्छा शक्ति ज्ञान शकित।।
दर्शन दे दे हे दुख हरनी।।० ।।

यह कुदरत तेरा ही रूप मूल प्रकृति का स्वरूप,
शीतल सरस्वती स्वरूप विक्राल काली का रूप।
तुम महालक्ष्मी पालन हारी।।
दर्शन दे दे हे दुख हरनी।।० ।।

एक महिला के तीन स्वरूप, माता का एक उसका रूप,
दूसरा पत्नी का रूप तीसरा माया स्वरूप।
माया बल से, तुम ज्ञानी को भ्रमती।।
दर्शन दे दे हे दुख हरनी।।० ।।

किसी माता ने बेटे को दिल से नहीं त्यागा,
यह मर्यादा तुम न तौड़, हे जग मातेश्वरी।
तुम भक्तों की है कल्याणी।।
दर्शन दे दे हे दुख हरनी।।० ।।



गुरु—वानी का संकेत

हे प्राणी भक्ति बिना, नहीं तेरा गुज़ारा है।
सन्तों सत्‌गुरु की, वाणी का इशारा है।।

जो भक्त है सत्‌गुरु के, वह द्वार पे आते हैं,
गुरु आज्ञा पाकर वह, सिर भेंट चढ़ाते हैं।
सत्‌गुरु का ही उनको, बस एक सहारा है।।
हे प्राणी भक्ति बिना, नहीं तेरा गुज़ारा है।।०।।

प्रभु सन्त रूप बनके, इस धरती पे आते हैं,
सेवा स्मरन, भक्ति का मार्ग दिखाते हैं।
भक्तों के हृदय में किया, ज्ञान उजाला है।।
हे प्राणी भक्ति बिना, नहीं तेरा गुज़ारा है।।०।।

बिना सेवा, कर्म कर के कोई नही छूटेगा,
सतगुरु की कृपा से ही, भव बन्धन छूटेगा।
करे सन्त भलाई सदा, जनहित ही प्यारा है।।
हे प्राणी भक्ति बिना, नहीं तेरा गुज़ारा है।।०।।

कई रूप बदले माया, जीवों को सताती है,
धोखे में फँसा कर के, दिन रात नचाती है।
इस झूठे कलियुग में, बस माया का बसेरा हैं।।
हे प्राणी भक्ति बिना, नहीं तेरा गुज़ारा है।।०।।

नोट :— एक भक्त के सोजनिय से प्राप्त हुवा है।



गुरु दरबार में हम कैसे आये?

तेरे दरबार में सतगुरु हम आशा लेके आये हैं।
नही सुनता जिसे कोई सुनाने आप को आये हैं।।

बड़े दरबार में एक सवाल छुपा कर मन में लाये हैं।
सुनाया जो नही किसी को, सुनाने आप को आये हैं।।

कई जन्मों से ढूँड के हम गुरु के द्वार पहुँचे हैं।
अगर सच मान लेंगें हम वहीं हम को बुलाए हैं।।

हम अपने मन की पीड़ा को ज़माने से छुपाये हैं।
जो घाव दिल में लगे हैं वह दिखाने आप को आये हैं।।

इस दुनिया के नाटकीय मंच का जो कार्य आपने सोंपा हैं।
कला जीने की शुद्ध हो जाये, पूजा करने आये हैं।।

हम संसार सागर की मंझदार में बहते डूबे जाते हैं।
इस भवसागर को तरने का साहारा मांगने आये हैं।।

हम अपने सतगुरु कृपा पर उमीदें आस लगाये हैं।
इन अपने खाली हाथों में, श्रदा के फूल लायें हैं।।

कृपा दृष्टि में सतगुरु की विधाता की है सहमती।
बुलंदियाँ क्यों न छू जाये, नज़र में तेरे आये हैं।।



वैष्णों भवानी की कविता कहानी।

तीन लोकों की राजरानी, जय माँ वैष्णों भवानी।
जय माँ वैष्णों भवानी, जय माँ दुर्गा भवानी।।

परम शिव की शिवानी, जय माँ दुर्गा भवानी।
भक्तों की तुम कल्याणी, दर्शन दे माँ भवानी।।

गुफा में आसन लगाई, बान गंगा चरणों में धारी।
तुम त्रिकुट पर्वत वासी, ऐ माँ अधकुवाँरी।।

इन होंठों पर तेरी हँसी, ऐ माँ त्रिपुर सुन्दरी।
शेर है वाहन सवारी, भक्तों की तुम कल्याणी।।

जम्मू नगरी में तेरी, माँ निरंतर ज्योत जगती।
लोक रक्षा में लगी, ऐ महा ज्योत स्वरूपी।।

भक्त श्रीधर के भंडार में, कन्या रूपी प्रकटी।
कमी अन की पूरी कर दी, ऐ माँ अन्पूर्णी।।

स्वपनों में श्रीधर के आयी, गुफा के दर्शन कराई।
लोक यात्रा खोल डाली, ऐ जग कल्याणी।।

दृष्टि में तेरी जो आये, पूर्ण शुद्धी वो पाये।
तुम काम क्रोध मर्धनी, ऐ शक्ति कुँडलनी।।

भैरव अभिमानी की, अंतिम इच्छा पूरी कर दी।
चरणों में भैरव समाई, ऐ माँ क्षमाश्वरी।।

शब्द ध्वन की तुम रानी, ऐ माँ शब्द ब्रह्मणी।
हर जीभ पर तुम हो वाणी, ऐ माँ परावाणी।।

तुम ही हो माहा सरस्वती, तुम ही हो माहा लक्ष्मी।
तुम ही हो माहा काली, तीन पिंड रूप माँ भवानी।।

तुम शिव की परा शक्ति, आनन्द स्वरूप माँ भवानी।
भक्तों की अनुग्रह कारनी, है अमृत स्वरूपी।।

तुम शिव की इच्छा शक्ति, तुम ही हो ज्ञान शक्ति।
हर योगी में तुम प्रकटी, आनन्द स्वरूप माँ भवानी।।

तीन कारणों की शक्ति, तुम ही हो महा गायत्री।
कलियुग में तुम प्रकटी, युग शक्ति माँ भवानी।।

जय माँ शारिका भवानी, जय माँ राज्ञिना भवानी।
जय माँ ज्वाला भवानी, जय माँ रूपा भवानी।।



भाग – 2

कश्मीरी – कवितायें

बोग – ज़ु (2)

कॉशरि आराधनायि



ॐ नमो भगवते गोपी नाथाय
दामान चोनुय रटने आये
(भाग—१)

ॐ नमो भगवते गोपी नाथाय,
दामानु चोनुय रटने आये।
दामानु चोनुय, ग्वरु पाद चॉनिय,
ग्वरु पाद चॉनिय रटने आये।।

ॐ नमो भगवते गोपी नाथाय,
दैवी दर्शुन चोन करने आये।
दैवी दर्शुन चोन, मार्ग दर्शुन चोन,
मार्ग दर्शुन चोन प्रावने आये।।

ॐ नमो भगवते गोपी नाथाय,
गुरु दीक्षा चॉन्य् रटने आये।
गुरु दीक्षा चॉन्य्, गुरु मंत्र चोन,
इष्ट मंत्र चोन रटने आये।।

ॐ नमो भगवते गोपीनाथाय,
साकार रूप चोन पूज़ने आये।।
साकार रूप चोन, प्रकाश स्वरूप चोन,
निराकार रूप चोन, पूज़ने आये।।

ॐ नमो भगवते गोपीनाथाय,
ॐ शब्दु नाव चोन ज़पने आये।
ॐ शब्दु नाव चोन, भगवान नाव चोन,
भगवान नाव चोन ज़पने आये।।

ॐ नमो भगवते गोपीनाथाय,
गुरु कृपा चॉन्य् मंगने आये।
गुरु कृपा चॉन्य्, गुरु प्रसाद चोन,
गुरु प्रसाद चोन, मंगने आये।।

ॐ नमो भगवते गोपीनाथाय,
योगु बल चोनुय मंगने आये।
योगु बल चोनुय, योगु सिद्धि चॉनी,
योगु दृष्टी चॉन्य् मंगने आये।।

ॐ नमो भगवते गोपीनाथाय,
अनुग्रह चोनुय मंगने आये।
अनुग्रह चोनुय, शक्तिपात चोनुय,
शक्तिपात चोनुय मंगने आये।।

(भाग—२)

ॐ नमो भगवते गोपीनाथाय,
श्वज़राह चोनुय हैछने आये।
स्यज़रा चोनुय, पज़रा चोनुय,
श्वज़राह चोनुय हैछने आये।।

ॐ नमो भगवते गोपीनाथाय,
दान पुन्य ग्वण चॉन्य् हैछने आये।
दान पुन्य ग्वण चॉन्य्, सहायक स्वरूप चोन,
दान वीर रूप चोन पूज़ने आये।।

ॐ नमो भगवते गोपीनाथाय,
पादि सीवा चॉन्य् करने आये।
पादि सीवा चॉन्य, ग्वरु सेवा चॉन्य्,
लोक सीवा चॉन्य् करने आये।।

ॐ नमो भगवते गोपीनाथाय,
कर्म योग चोन ॲस्य् हैछने आये।
कर्म योग चोनुय, भक्ति योग चोनुय,
ध्यानु योग चोनुय हैछने आये।।

ॐ नमो भगवते गोपीनाथाय,
होम यज्ञ चोनुय करने आये।
होम यज्ञ चोनुय, ज्ञानु यज्ञ चोनुय,
ज्ञानु यज्ञ चोनुय करने आये।।

ॐ नमो भगवते गोपीनाथाय,
अमर्यतु प्रसाद चोन रटने आये।
अमर्यतु प्रसाद चोन, भगवत प्रसाद चोन,
भगवत प्रसाद चोन रटने आये।।

ॐ नमो भगवते गोपीनाथाय,
चिलमि ज्यूत्य चॉन्य् ॲस्य् समरुनि आये।
चिलिम ज्यूत्य् चॉनी, धोनि भस्म चोनुय,
भस्मा चोनुय मंगने आये।।

ॐ नमो भगवते गोपीनाथाय,
गुरु महिमा चोन ग्यवुने आये।
गुरु महिमा चोन गुरु गीता चॉन्य्,
गुरु गीता चॉन्य् परने आये।।



बबु चाने लोलय यि अहम गालय
तौलि बेमार बलय

बब चाने लोलय यि अहम गालय,
तौलि बेमार बलय।
ग्वरु भक्ति अनुग्रह चानि तरय,
तौलि बेमार बलय।।०।।

ज़्यथ ज़ीवस लगान मरु मरय,
ग्वरु शब्दु चानि तरय।
बन्द गोमुत छुस त्रॉवुम यलय,
तौलि बेमार बलय।।०।।

देह ब्वदि छुय लगान मरु मरय,
आत्म् व्यचारु तरय।
साकार निराकार बेद चोन ज़ानय,
तौलि बेमार बलय।।०।।

संकलप दॅरियावस तार मे दितम,
वासनायि बीज़ गालतम।
ब्रह्म चेतनायि बॅठिसुय खसय,
तौलि बेमार बलय।।०।।

मंज़ ध्यानस पान रावरावुन,
गॅयि दयि वथ प्रावुन्य्।
रॉव्य् रॉव्य् यॆलि चानि ज़ेरि लबय,
तॊलि बेमार बलय।।०।।

ग्वरु कृपायि बॆयि अनुग्रेह तरय,
पोत नो व्वन्य् बु फेरय।
छ़ेनु गोमुत छुस कॉल्य् बु मेलय,
तॊलि बेमार बलय।।०।।

ग्वरु पादन तल आनंद करय,
ग्वरु सीवाये बु लगय।
ध्यान धारुनायि चानि ज़िंदय मरय,
तॊलि बेमार बलय।।०।।

लोल चोन यॆलि सारिनुय बॉगरावय,
तॊलि बेमार बलय।
शुभ कर्मन चोन यछुन वुछय,
तॊलि बेमार बलय।।०।।

ख्वश करुन तु बेयि खरुनुय,
गव हा ज़्योन तु मरुनुय।
राग द्वेशि मंज़ थोद व्वथय,
तेलि बेमार बलय।।०।।

दुयी मंज़ कुन्यरा चोनुय छावय,
तेलि बेमार बलय।
सम द्रष्टी येलि चानि प्रावय,
तेलि बेमार बलय।।०।।

ज़रु ज़रु दयि रूप प्रज़नावुन,
गव हा तारु तरुन।
मौन धॉरिथ येलि अंज़ान लागय,
तेलि बेमार बलय।।०।।

ग्वरु भॅक्ती गॅयि ईश्वरु भॅक्ती,
कासतम च़्यय सखती।
प्रकाशमय चोन रूप वुछय,
तेलि बेमार बलय।।०।।



गुरुवे नमः परम गुरुवे नमः

(भाग—१)

कुल दीवी पनुनि सूज़नख कोरनख गुरुसुय हवालु,
गुरु योगु बलु सुत्य् व्यन्य् संबालि चोन हाल।
हल करि चोन स्वाल, अख गुरू सुंद नाव।।
परसॉ गुरुवे नमः सत् गुरुवे नमः।।०।।
सत गुरुवे नमः परमु गुरुवे नमः।।०।।

गुरु छु साक्षात ब्रह्म, युथ ना रोज़ी च़ु भ्रम,
ग्वरस नखु यिनु सुत्य् शमी अशान्त मन।
मन चोन करि निर्मल, अख ग्वरुॅ सुंद नाव।।
परसॉ गुरुवे नमः सत् गुरुवे नमः।।०।।
सत गुरुवे नमः परमु गुरुवे नमः।।०।।

स्वखुदायक तु आनन्द दायक छु गुरु सुंद द्वार,
श्रोचि़ श्रानि ॲचि़थुय बरुस लोल भारमबार।
श्रद्धावानस दियि हा तार, अख गुरु सुंद नाव।।
परसॉ गुरुवे नमः सत् गुरुवे नमः।।०।।
सत गुरुवे नमः परमु गुरुवे नमः।।०।।

देह ब्वद त्यॉगिथ आत्म ब्वद चु वुज़नाव,
यथ तनि ग्वरन वौन महाकालु सुंद भूज़न।
माहाकालु सुंद भय कासि अख गुरु सुंद नाव।।
परसॉ गुरुवे नमः सत् गुरुवे नमः।।०।।
सत गुरुवे नमः परमु गुरुवे नमः।।०।।

कुसू प्रावि आत्म ज्ञान, ग्वरन वौन व्यचारु वान,
गुरु सोन छुय वनान, अमर छुनु ज़ांह मरान।
अमरतायि हुंद अमृत, अख गुरु सुंद नाव।।
परसॉ गुरुवे नमः सत् गुरुवे नमः।।०।।
सत गुरुवे नमः परमु गुरुवे नमः।।०।।

आत्म दीवस छ़ाय अहमुच, खट्टनावान छय,
वासनायि सुत्य रँगिथ छय ब्वद चॉनी।
आत्म स्वरूपस मॅशरावान छय।
अंतःकरण श्वद्ध कर्‌वुन छु ग्वरु नाव।।
परसॉ गुरुवे नमः सत् गुरुवे नमः।।०।।
सत गुरुवे नमः परमु गुरुवे नमः।।०।।

अंहकारस नमस्कार वौन ग्वरन ज्ञानुक सार,
गुरु कृपायि बनि बु तु म्यॉनिस च्यॅय तु चोन।
शेर्‌वुन छु कर्मुलोन, अख गुरु सुंद नाव।।
परसॉ गुरुवे नमः सत् गुरुवे नमः।।०।।
सत गुरुवे नमः परमु गुरुवे नमः।।०।।

आत्म सिरियस चु पानु ग्रहुण लॉगिथ छुय,
यथ मोह गटि वनतु क्योहो यियि चे बोजनय।
आत्म ज्ञानकुय गाश अख गुरु सुंद नाव।।
परसॉ गुरुवे नमः सत् गुरुवे नमः।।०।।
सत गुरुवे नमः परमु गुरुवे नमः।।०।।

ग्वरन ध्युत समाधान ठीक ठीक रटुन भगवान,
तमी सुत्य् प्रावख ज़िंदय र्निवान।
ऊँ नाद भोज़नावी, अख गुरु सुंद नाव।।
परसॉ गुरुवे नमः सत् गुरुवे नमः।।०।।
सत गुरुवे नमः परमु गुरुवे नमः।।०।।

(भाग—२)

गुरुन वोन कल्यानुक वचुन गुरु कृपा तु मेहनत पनुन्य,
कामु वासना सहित सिद्धि मुशकिल छे बनुन्य।
नेशकाम कर्मु भाव दिथि अख गुरु सुंद नाव।।
परसॉ गुरुवे नमः सत् गुरुवे नमः।।०।।
सत गुरुवे नमः परमु गुरुवे नमः।।०।।

भूज़न संकूच कॅरिथ, ग्वरन वश कोर इन्द्रेय द्वार,
प्राणु चूर रॅटिथ मनस करु ठॅहराव।
योग सिद्धि दायक, अख गुरु सुंद नाव।।
परसॉ गुरुवे नमः सत् गुरुवे नमः।।०।।
सत गुरुवे नमः परमु गुरुवे नमः।।०।।

माया हा डोख छुय अमर आत्मायि हुंद,
मे मंज़ ना म्योन केंह येम्य सुंद तस पुशराव।
मायायि मल गालु वुन अख गुरु सुंद नाव।।
परसॉ गुरुवे नमः सत् गुरुवे नमः।।०।।
सत गुरुवे नमः परमु गुरुवे नमः।।०।।

द्वयतुक जंग त्राव, कुनिऱ् भाव च़ु वरताव,
विश्व रूप दॉरिथ ग्वरन वॊननय पानस अय्स।
सम दृष्टी करी प्रधान, अख गुरु सुंद नाव।।
परसॉ गुरुवे नमः सत् गुरुवे नमः।।०।।
सत गुरुवे नमः परमु गुरुवे नमः।।०।।

ऊँ छु परमार्थुक सार ग्वरन वॊन बार बार,
ऊँ ज़पु स्त्यन मेलि आत्म साक्षातकार।
ज़पु योग स्यद करि, अख गुरु सुंद नाव।।
परसॉ गुरुवे नमः सत् गुरुवे नमः।।०।।
सत गुरुवे नमः परमु गुरुवे नमः।।०।।

पॅर्‌य पॅर्‌य हा सोरीय गाश ग्वरन वॊनुनय तोर छा गाश,
कृति कर्म पनुन सुधार, पानय वुज़िय ज्ञानची घार।
अनपढ़स ति दिियि हा तार, अख गुरु सुंद नाव।।
परसॉ गुरुवे नमः सत् गुरुवे नमः।।०।।
सत गुरुवे नमः परमु गुरुवे नमः।।०।।

देश रक्षक भॅक्त्यन रछिवुन छु ग्वर सोन,
गुरु सोन शेरि असि कर्मु खुर तु कर्मु लोन।
युथ सामरथवान, अख गुरु सुंद नाव।।
परसॉ गुरुवे नमः सत् गुरुवे नमः।।०।।
सत गुरुवे नमः परमु गुरुवे नमः।।०।।

गुरु पूज़ा न्यथ करुँन्य् ग्वरन वोनुय यि गछ़ि यछुन,
गुरू पूज़ा गयि, ईश्वर पूज़ा।
प्रकृत चॉन्य् मुक्त करि, अख गुरु सुंद नाव।।
परसॉ गुरुवे नमः सत् गुरुवे नमः।।०।।
सत् गुरुवे नमः परमु गुरुवे नंमः।।०।।

गर्व कथू करि ज़ीव, लॅगिथ मरु मरु छुस,
ग्वरुँ सुन्ज़ जीवन ज्योती, काल ह्योकनु छ़यतु कॅरिथि।
देह देहत्यॉगिथ करान व्यवहार तॉमिस कौरिय बब नाव।।
परसॉ गुरुवे नमः सत् गुरुवे नमः।।०।।
सत गुरुवे नमः परमु गुरुवे नमः।।०।।

ब्रोमध्य ध्यान धॉरित, ब्रह्माण्डस पनुनिस च़ु खस,
आत्म आनन्दंस मंज़ बब चिलम चथ गव मस्त।
सिर श्वास वुशासुक भावी, अख गुरु सुंद नाव।।
परसॉ गुरुवे नमः सत् गुरुवे नमः।।०।।
सत गुरुवे नमः परमु गुरुवे नमः।।०।।



गुरु छुय आत्म स्वरूप

खुदीय हुन्दिस सागरस मंज़ डुबित आलम चु मॅशराव,
तनुच सोरुय स्वद—ब्वद त्रॉविथ,
मनुकॅन लहरन शान्त कॅरिथ।
आत्म स्वरूप ज़ान,
पनुन अमर पान ज़ान चु अशान्त ज़ीवो।
परसॉ गुरुवे नमः सत् गुरुवे नमः परम गुरुवे नमः।।०।।

गुरु सोन छुय अंतरयॉमी,
सारिनुय मनन हुंद छुय अमर सॉक्षी,
बे आसरन हुंद छुय अमर सॉथी,
ज़ानतन अशान्त ज़ीवो।
यॅहय गॅयि ग्वरु ज़ान युहय गव भगवान,
ज़ानतन अशान्त ज़ीवो।।
परसॉ गुरुवे नमः सत् गुरुवे नमः परम गुरुवे नमः।।०।।

भॅक्तयन छुय थलि थलि वुछान,
संकटनि गटि मंज़ अथु रोट करान,
प्रणाम सामरथवानसुय, प्रणाम सोन तॅस्य् सामरथवानसुय।
यॅहय गयि ग्वरु ज़ान युहय गव भगवान,
ज़ानतन अशान्त ज़ीवो।।
परसॉ गुरुवे नमः सत् गुरुवे नमः परम गुरुवे नमः।।०।।

तस लछिनॉविस कुस नाव बु करस,
बोल बोश पनुनुय छूवपि मंज़ लय करस,
प्रणाम सोन अनुमियस, प्रणाम सोन तस अनामियस।
यॅहय गयि ग्वरु ज़ान, युहय गव भगवान,
ज़ानतन अशान्त ज़ीवो।।
परसॉ गुरुवे नमः सत् गुरुवे नमः परम गुरुवे नमः।।०।।

चे़य निश सोरुय ज़गत छु द्रामुत,
न्यबरिम यि छ़ॉडुन मॅशराव,
तनुच तु मनच कशमकश त्रॉविथ,
तनुच तु मनुच कशमकश त्रॉविथ।
आत्म स्वरूपॅच आज़ॉदी प्राव, चु अशान्त ज़ीवो,
यॅहय गयि ग्वरु ज़ान युहय गव भगवान,
ज़ानतन अशान्त ज़ीवो।।
परसॉ गुरुवे नमः सत् गुरुवे नमः परम गुरुवे नमः।।०।।

अज्ञानकिस ऑबरस ओश बनाव,
सुय चु़य नैत्रव किन्य अदु हार,
अदुहा प्रज़ली आत्माहुक प्रकाश,
अदुहा प्रज़ली आत्माहुक प्रकाश।
यॅहय गयि ग्वरु ज़ान युहय गव भगवान,
ज़ानतन अशान्त ज़ीवो।।
परसॉ गुरुवे नमः सत् गुरुवे नमः परम गुरुवे नमः।।०।।

रॉविथ ति केंह ना रोवमुत च़ेय छुय,
प्रॉविथ ति केंह ना प्रावुन छुय,
यिय छुख तु ती हा प्रज़नावुन छुय,
यिय छुख तु ती हा प्रज़नावुन छुय।
अज्ञानकुय अंधकार त्राव ज्ञानुक यि अंहकार त्राव,
यॅहय गयि ग्वरु ज़ान युहय गव भगवान,
ज़ानतन अशान्त ज़ीवो।।
परसॉ गुरुवे नमः सत् गुरुवे नमः परम गुरुवे नमः।।०।।

निर्वाण ची वुज़मलि सुत्य् रुम रुम हा शान्त गछनय,
पतु नु च़ु च़ु केंह रोज़ख, पतु ना च़ु च़ु केंह रोज़ख।
आनन्दुकिस सागरस मंज़ डुबॅक,
रूपुवान ऑसिथ अरूप बनख,
यॅहय गयि ग्वरु ज़ान युहय गव भगवान,
ज़ानतन अशान्त ज़ीवो।।
परसॉ गुरुवे नमः सत् गुरुवे नमः परम गुरुवे नमः।।०।।



नेन्दरि व्वथू छुख
भगवान सुंद स्वरूप ज़ीवो

संसारु द्वखस मंज़ चे़ नेन्दुर त्रॉवुथो,
नेन्दरे व्वथू छुख भगवान सुंद स्वरूप ज़ीवो।
लल़ु माजि यथ देहस वोन, दय स्वरूप नावो।।
नेन्दरे व्वथू छुख भगवान सुंद स्वरूप ज़ीवो।।०।।

मॅरिथ चे़ पलंगु प्यठु पथर त्रावनयो,
खोर बानन निश पथर सावनयो।
कडुनस जलदी पनुनी बॉच़ करनयो,
ज़िंदय विज़ि विज़ि शिव नाव स्वरतो ज़ीवो।।०।।

मृत्यू लोक बाल़ु अपारि ग्वरु छुय प्रारान,
आचार व्वचा़र पाल दयि क्रेयि पान गाल।
गरुॅ गछ़नुक कर खयाल च़ट् मोह तु माय।।
नेन्दरे व्वथू छुख भगवान सुंद स्वरूप ज़ीवो।।०।।

पनुँनिस ग्वरस प्यठ यछ़ पछ़ थॅव्य़्ज़े,
ग्वरुॅ लोंचि च़ु पानय चीर् थफ कॅरिज़े।
वतु हावुक छुय चे़ ग्वर यिनु नज़र ड़लियो।।
नेन्दरे व्वथू छुख भगवान सुंद स्वरूप ज़ीवो।।०।।

संकल्प विकल्पन हुंद दरियाव छुय वसान,
ग्वरुॅ स्मरनि सुत्य् बॅठिस छिय रवसान।
पदवी अमर साक्षिक कोनु छुख प्रावान।।
नेन्दरे व्वथू छुख भगवान सुंद स्वरूप ज़ीवो।।०।।



ग्वर् दृष्टी

कुनी दृष्टी दिल चूरि छुख निवान च्यतुके चूरु भगवानो,
कर्मु खुर सोन छुख, शेरान चित शक्ति रूपु भगवानो।

कमन भॅक्तयून दिवान आलव चु कोर कोर पानु भगवानो,
मोन दिक्षा दिवान भॅक्तयन कुनी दृष्टी पानु भगवानो।

अॅछन सुत्य् अॅछ मिलुर्नोविथ मनस धर्मुक ब्योल त्रॉविथ,
मौन दीक्षा छि चॉन्य् अॅथ्य वनान ग्वरन हुँदि ग्वरु भगवानो।

चितशक्ती हुंदि सपंदु चाने ध्यानु धारना लगान पानय,
अॅछ सानि बंद गछ़ान पानय छुख योगीश्वर भगवानो।

मन व्रती गूपियन हुंद नाथ चु गोपीनाथ भगवानो,
वासनायि बीज़स द्यू चु नार सिथर कर मन भगवानो।

त्रिकाल दृष्टी छि चॉनी वुछान पॅतिम ब्रूंठिम सोनुय हाल,
भक्ति पूज़ा कर सॉ पूर्ण छुख परिपूर्ण भगवानो।

यि संसार आवलुन छुय सौन ज़हर ज़न्मुक छु ज़ीवस चौन,
अमर आत्मुहुक कति पैयि ज़्वन कृपायि चॉनि रौस भगवानो।

मनु वासनायन हुंदय दाग चे़ रोसतुय असि कुस मिटावि,
मनुक्यन रूगन चोनुय यलाज अधिात्मिक वैद्य भगवानो।

नेशकाम कर्म योगुक पद चे़ पानु प्रोवुथ तु हॉवुथ वथ,
मान अपमान कुनुय जानुनाव छुख कर्म यूग्य् पानु भगवानो।

मनु किन्य् दोरुथ चे़ पूरुँ सॅन्यास, ग्रहस्तस मंज़ कोरुथ तोति वास,
यि ग्रहसती कत्यू लबि तार, कृपायि चानि रोस भगवानो।

रुद्र रूपुच छे चे़य प्रीती अष्ट भैरव छि चे़य सुती,
भगवान शंकर सुन्ज़ छय चे़ प्रीती, रूद्र रूपु टाठि भगवानो।

मृत्य लूकुक्य अॅस्य् छि वॉसी मन रोज़ान सोन उदॉसी,
परम दामुक छुख चु़य वॉसी, आनन्दगण टाठि भगवानो।



सथ ग्वर् तु इष्ट दीवी

ग्वर् दीवस तस भगवानस वॉतिनस सोनुय प्रणाम,
योगीश्वुरसुय तस रक्षपालुसुय वॉतिनस सोनुय प्रणाम।
भावु बॅरिथुय छुय सोन प्रणाम, लोलु बॅरिथुय छुय प्रणाम।।

ग्वर् दीवस छुय नमस्कार, इष्ट दीवी छुय प्रणाम,
सर्वव्यापक मॉज भवॉनी, वॉतिनय सोनुय प्रणाम।
ग्वर् रूपस छुय नमस्कार, माता रूपसुय छुय प्रणाम।।

गरि कॅड्यमुत्यन ओल लुहुरिमुत्यन कर दया असि भवॉनी,
ग्रह पीडितन असि षॉपियन कर क्षमा असि भवॉनी।
शॅुत्रु नाशनी, भय नाशनी, वॉतिनय सोनुय प्रणाम।।

प्रॅखटेयख बनेयख शारिका बैयि रॉगिन्या भवॉनी,
कर बुलावख दितु वॉनी म्यॉज रॉगिन्या भवॉनी।
त्रिकूट परवतुॅच छख चु वैषनवी, वॉतिनय सोनुय प्रणाम।।

क्वल रछिवुन्य क्वलु दीवी सॉन्य्, माफ करी शुर्य बॉश सॉन्य्,
रछान चुय आयख कर रक्षा सॉन्य्, वॉतिनय सोनुय प्रणाम।
ग्वर् रूपस छुय नमस्कार, माता रूपसुय छुय प्रणाम।।०।।

चुय ऑनिस भक्तिस, ग्वर श्रेष्ट दिवान ग्वरु सिवॉय लागान,
ग्वरु कृपायि रूप अनुग्रह छख करान, वॉतिनय सोनुय प्रणाम।
ग्वरु रूपस छुय नमस्कार, माता रूपसुय छुय प्रणाम।।०।।

सन्तुष्ट कॅरिथ, दिन असि गुरु महाराज;
युथ मुचराविं कृपायि हृन्द्य द्वार।
ती ती करनाव, यी गुरु यछ़ान, वॉतिनय सोनुय प्रणाम।।
ग्वरु रूपस छुय नमस्कार, माता रूपसुय छुय प्रणाम।।०।।

पृथ्वी रूप दॉरिथ छख प्रत्यक्ष माता;
सीनस प्यठ ज़ीवन छख ललवान,
मरुवुन ज़ीव माजि पृथ्वी लारान, वॉतिनय सोनुय प्रणाम।।
ग्वरु रूपस छुय नमस्कार, माता रूपसुय छुय प्रणाम।।०।।

अन तय फल दिथ छख चु अनपूरना;
ज़ल रूप दॉरिथ छख मल कासान।
गंगा स्वरूपनी मॉज भगवॅती वॉतिनय सोनुय प्रणाम।।
ग्वरु रूपस छुय नमस्कार, माता रूपसुय छुय प्रणाम।।०।।

संतव सारिवुय रॅट चोन दामन, अदु प्रोवुख परम धाम,
अष्ट सेद्धी मॉज करेथक प्रधान, वॉतिनय सोनुय प्रणाम।
ग्वरु रूपस छुय नमस्कार, माता रूपसुय छुय प्रणाम।।०।।

गुरु सोन हाविना असि मॉज चोन श्वब दर्शुन,
ग्वरन होव चे़ सुत्य् बिहित आसन।
प्रकाशस चॉनिस कॉँह कॉँह दरान;
वॉतिनय सोनुय प्रणाम,
गुरु रूपस छुय नमस्कार, माता रूपसुय छुय प्रणाम।।० ।।

ग्वर सोन ओसना शक्ति पीठन गछ़ान,
इष्ट दीवी बबस ऑसुय टोठान।
बबु सुंज़ि यछ़ायि माता ऑस प्रखटान वॉतिनय;
सोनुय प्रणाम,
माजि सुत्य् बिहिथ संवाद ओस करान,
पनुन्यव अथव माजि ओस ख्यावान।
पनुनुय वाहन माता ऑसुस सोज़ान।।
ग्वरु रूपस छुय नमस्कार, माता रूपसुय छुय प्रणाम।।० ।।

माया रूपु चानि सुत्य छिय ज़ीव भ्रमान,
अनुग्रह रूप छख, शिव स्वरूप हावान।
ग्वरु रूप धॉरिथ माया मल कासान;
वॉतिनय सोनुय प्रणाम,
ग्वरु रूपस छुय नमस्कार, माता रूपसुय छुय प्रणाम।।० ।।

माया बल् चानि सुत्य् ज्ञॉनी ति भ्रमान,
शरीर आकर्शनी, रूप आक्रशॅनी, नाम आक्रशॅनी।
मॉज भगवॅती वॉतिनय सोनुय प्रणाम,
लुहरिथ दिम मायायि दीवार दृष्टी ख़ुल्यम;
आर तय पार।।
ग्वरु रूपस छुय नमस्कार, माता रूपसुय छुय प्रणाम।।० ।।

शब्द ब्रह्मनी दिम ॲन्दुर्‌य आवाज़,
लगि ध्यान बूज़िथ चोन साज़।
देह बंदयि यि कॉद मंज़ करुन आज़ाद,
वातिनय सोनुय प्रणाम।।
ग्वरु रूपस छुय नमस्कार, माता रूपसुय छुय प्रणाम।।



ग्वरु आत्म दीव वनान

(अमरतायि हुंद अमृत)

Guru - The divine self says

ग्वरु आत्म दीव वनान, कोनु छुख चु बोज़ान,
ब्रह्मी विद्यायि हुँद सार, ज़िंदुजुवु गछ़ बोज़ान।

नॅ छुसय यि तन बु नु छुसय यि मन बु,
बु छुसय अमर पानु कोनु ज़ानान छुख।
नॅ छुसय यि तन बु नु छुसय यि मन बु।।०।।

नॅ ज़ांह ज़ामुत नॅ ज़ांह छुम नॉशुन,
ज़्योन तु मरुन अंहकारस छुय गुमानय।
नॅ छुसय यि तन बु नु छुसय यि मन बु।।०।।

नॅ छुसय बु मनुक्यन वावन तूफानन मंज़,
मनु वृतियन हुंदुय अमर सॉक्षी छुसय बु।
नॅ छुसय यि तन बु नु छुसय यि मन बु।।०।।

त्रैगुन दूश यि देह कर्म छुय करान,
अकर्ता स्वरूप गुनातीत छुसय बु।
नॅ छुसय यि तन बु नु छुसय यि मन बु।।०।।

नॅ छुसय अज्ञानुचे कालु अनिगटि मंज़,
नॅ छुसय बु ज्ञान गाशिचे वुज़मलि मंज़।
अज्ञान तु ज्ञानु दूर स्वप्रकाश छुसय बु।।०।।

नामु रूप संसार छुय संकल्प शक्ती म्यॉन्य्,
रंगु रूप दॉरिथ पानु बे रंग छुसय बु।
नॅ छुसय यि तन बु नु छुसय यि मन बु।।०।।

नॅ छुसय बु चोन तु म्यॉनिस द्वयतु भ्रमस मंज़,
विश्व रूप दॉरिथ कुन तु कीवल छुसय बु।
नॅ छुसय यि तन बु नु छुसय यि मन बु।।०।।

येमि रूपु च़ु वुछिहम सुय रूप छुसय बु,
यिथु पॉठ्य च़ु वुछिहम, तिथु पॉठ्य वुछथ बु।
नॅ छुसय यि तन बु नु छुसय यि मन बु।।०।।

नॅ तनि हुंद गुलाम़ नु मनुॅकुय गुलाम,
बस हा अंहकारुहीन आज़ाद छुसय बु।
नॅ छुसय यि तन बु नु छुसय यि मन बु।।०।।

म्याने फ्वलुनय सिरियि च़ुन्द्रम फ्वलान,
सतुक परम सत, गाशुक गाश छुसय बु।
नॅ छुसय यि तन बु नु छुसय यि मन बु।।०।।

शब्द प्रकाश छुय, वति अख पड़ाव म्योन,
शुन्यस मंज़ रूज़िथ प्रकाश विर्मश छुसय बु।
नॅ छुसय यि तन बु नु छुसय यि मन बु।।०।।

वॉनी क्याह वर्णन करि, तस परा वॉनी,
नादु रूपु भवॉनी, दिय अव्यक्तु ज़ॉनी,
नॅ छुसय यि तन बु नु छुसय यि मन बु।।०।।

शारिका भगवती और भगवान जी

तीन लोकों की राजरानी, जय माँ शारिका भवानी।
जय माँ शरिका भवानी, जय माँ रागिन्याँ भवानी।।

सत् गुरु की इच्छा से माँ, देवी आंगन में प्रकटी।
सत् गुरु की गौद में बैठी, कन्या रूपी माँ भवानी।।

सत गुरु के हाथों से खाई, प्रेम का भोग माँ भवानी।
भक्तों की लाज रख ली, है माँ अनुग्रह कारिणी।।

यि बु

"This False I"

यि 'बु' संसारुक छुय बडि खोतु बोड भ्रम।
बेमार मनस रॅटिथ,ज़न शाँश तय तम।।

Identification with the seemingly independent psycho-physical "I" (i.e independent of immortal Atman) is the greatest delusion in the world. This delusion of the ailing mind is the cause of Asthma-like stress & strain to the individual.

मिथ्या बु त्यॉगिथ कत्यू पोशी चे़ यम।
तौली मालि च़ली, यिनु गछ़ुनुक भ्रम।।

With the forsaking of this false "I", the threat of death shall vanish & the illusion of birth & death shall fall off.

यि 'बु' त्रॉविथ शमी चोनुय अशांत मन।
परम आनंदुकुय पैयी चे़ अदु ज़्वन।।

By forsaking the identification with the false "I", the pure state of the otherwise restless mind shall be restored & the memories of blissful, immortal Atman shall dawn.

यि 'बु' त्रॉविथ छ्वन्यर चोनुय गछ़ी कम।
पूर्णतायि मंज़ व्वलुसख च़ु क्षण क्षण।।

All psychological deficiencies shall dissolve with the thrill of self-perfection & wholeness.

यि 'बु' आत्माहस प्यठ छय पकवुन्य् छ़ाय।
अमर पान ब्रोन्ह यिथ अथ छय मशान ग्राय।।

This "I" is a restless shadow on the respledent "I" (i.e., Atman) & with the coming of the immortal self to the front, it shall cease to be restless.

दवु दव करुनस ना छस रोज़ान जाय।
च्यतु सिरियस ज़न व्वथी ओबरुँच छ़ाय।।

In the absence of desires, there is no meaning in association with "I". Thus the spiritual Sun gets declouded.

दिवान पतु ब्रोंठु छुय यि 'बु' छ्वख तय ग्राय।
य्वहय मोटरावान छुय मोह तय बेयि माय।।

This "I" is responsible for attachment to the past & the future, thus generating love, averice, fear & jealousy which in turn become the cause of evil & suffering to the individual.

अमी मोह मायि मंज़ द्राव, वेंह्य तय वाय।
अथ विज़ि वावस लॅज सॉनी नाव।।

This attraction & false attachment to this material world, gives rise to sorrow & suffering. In this storm of misaprehension, the boat of our life got entangled giving rise to the evil of fear & suffering.

यि मैति म्योनुय अमी 'बु' मंज़य द्राव।
द्वयतुक यि भ्रम अमी 'बु' मंज़य ज़ाव।।

From this sense of separate "I" has sprung forth me & mine. With this the delusion of duality had its birth, thus creating restless in the ideal state of the mind.

मिथ्या ज़ॉनिथ अमी 'बु' ची लय चु त्राव।
बैन्यर त्यॉगिथ अमर पानुच थय्फ चु थाव।।

Identifying yourself with the universal immortal self, give up fondness & attachment to this false ego born out of delusion.

देह ब्वद त्यॉगिथ अमर साक्षुच पदवी प्राव।
मॅशराव बैयि पनुन अलग आव तय जाव।।

Gaining the status of eternal witness, shun this delusion of a separate body-existence & this coming & going.

व्यापकता अमर पानुच, पानय चु वुज़नाव।
मैति म्यान्युक विलाप प्रभू भक्ति मंज़ त्राव।।

Live in the bliss & freedom of Atman & develop awareness of its all pervasiveness. Rising above faint heartedness, give up the selfish attitude of weeping & wailing during the worship of the divine.

यैमि चिह्युक करू ध्यान अॅथ्य् लाग पनुन पान।
पगाह बुथि क्याह बनि पुशराव दयस पान।।

Concenrate on the present moment & take care of the present assignment. Surrendering to the Lord, give up the worry of what may or my not happen tomorrow or in the future.



च़्यथ सिरिय

The luminous Sun of pure consciousness

1. पूज़ करुहॉय च़्यथ सिरियस,
तस अमर साक्षस।
तस निराकार शिवस।।

My heart longs to worship the self-effulgent Sun of pure consiousness, who is the immortal and all witnessing formless God, Shiva.

2. अहम अर्पण करस,
मनु वॅ़चन बु माल करस।
तस निराकार शिवस।।

Let the psycho-physical I, surrender to the higher-self. Let me present a garland of mind-waves to the self-lumnious reality - Shiva.

3. कोना बु नमस सत्किस सतस,
गाशि किस गाशस।
तस निराकार शिवस।।

Why should not I bow to the "Truth of the truth", "Light of the light" - that formless Shiva.

4. संकल्प विकल्पन हुन्ज़ माय बु त्रावस,
मोक्ष दामुक अमृत ह्यमस।

तस निराकार शिवस।।

I shall give up the fondness and passion for ideas, thoughts and discursive knowledge and demand the nectar of immortality from Him.

5. कुनिरसुय मंज़ बॆन्यर हावनस,
चूरि छ़ेपि ज़न गिंदुनस।
नमो निराकार शिवस।।

Showing diversity in unity, it plays the game of hide and seek, as it were, hence let us bow to him.

6. मायायि सुत्य कुन्यर खटुनस,
ग्वरु रूप दॉरिथ माया हरनस।
नमो निराकार शिवस।।

With the help of the inscrutable power (called Maya), it conceals its unity & aloofness and reveals the truth by appearing as one's Guru.

7. ह्यसु कुय छुय सु ह्यसु,
आनन्दुक रस, सहसरारस मंज़ खसस।
तस निराकार शिवस।।

Shiva is pure awareness and full of bliss. In perfect concentration, I shall shift my awareness to the crown of the head i.e., the place of the thousand-petalled lotus.



माया

"Maya" The concealing and make - believe power of Nature.

1. माया वुछमय चूर करान।
अपज़िस पोज़ बासनावानो।।

I saw theivish Maya Stealing;
Making untruth appear as truth.

2. ज़ीवस छु ज़ीवुत मोटरावान।
कर्मु बंधनन ज़ीर ज़ीर दिवान।।

It nourishes the finitude of the embodied soul.
And sets karmic bonds in motion.

3. मंज जाग्रतस सोपना छि हावान।
गरि गरि ज़ीवस ब्रोमुरावान।।

During waking, it mesmerises us to see its own dreams in the world. Every now and then it hypnotises an individual.

4. हवस तु वासनायि छय हा कारण
हवुसु पूर्ती मंज़ छि वाँस सोरान।
पतु ना अदु केंह छुय लारान।।

It is the cause of passion and lust in the mind.
In this drunken state of mind, life is spent.
In the end nothing lasting comes to hand.

5. ज़ीवस छुय अहमुकुय कारण।
कर्म बन्धनन य्वहय वोनान।।

It is the cause of egotism in man.
This imaginary "I" knits the knots of bondage.

6. मंज़ गाशस छुय गटि हुंद कारण।
वुछनस मंज छुय अनिरुक कारण।।

Amidst light, it is the cause of darkness.
While seeing, it is the cause of spiritual blindness.

7. शाँन्ती मंज़ छुय अशॉन्ती हुंद कारण।
स्वखसुय मंज़ छुय द्वखुकुय कारण।।

Amidst peace, it is the cause of perturbation.
Amidst happiness and harmony, it is the cause of sorrow and suffering.

8. रावनय छय रावनुक कारण।
यॅहय थैपि थैपि छ़ांड्नुक कारण।।

Amidst self-fulfilment, it is the sense of some thing having been lost. It is the cause of seeking and searching.

9. आसनस मंज़ छुय नॅ आसनुक कारण।
राज़स ताम छुय बैछिनावान।।

In self sufficiency, it creates the illusion of want.
In utter forgetfulness, it makes the king act as a beggar.

10. देह, बोज़ हुंद छुय हा कारण।
अमरतायि् मंज़ छुय मरनुक कारण।।

It is the cause of the myopia of body-consciousness.
Amidst immortality, it creates the illusion of death.

11. कुनिरस मंज़ छुय बैनिरुक कारण।
पूर्णतायि् मंज़ छुय छ्वनिरुक कारण।।

In all unity, it creates the illusion of diversity.
Ultimate reality though one, appears as many. It
has consciouly become this universe of multiplicity.
In all completeness, it creates the illusion of
deficiency.

12. शिवस छि भक्तिस निश यि खटान।
होर योर यॉहय छस हा डालान।।

It conceals Shiva (The over self) from the devotee
and tries to allure him by ephemeraltíes of this and
that.

13. ज्ञानु प्रकाशस तल छि पिगलान,
शिव सुंज़ि नज़रि तल छे नो दरान।
शर्मि सुत्य गॉल्य् गॉल्य् छय गछ़ान।।

The glare of self - knowledge melts it down.
When Shiva (The true self) comes to the front, it
takes to its heels.
In utter abashment, it melts away.



शोंगिथ सरुफ

The World - The sleeping serpent

1. संसार शोंगिथ सरुफा
पेठ्य पकान ज़ीव स्योद सादा।।

This world of birth and death (Samsara) is a sleeping serpent. Over it, the individual moves in utter innocence and ignorance.

2. पज़ुरुच छस नो पता
अमर पानस निश जुदा।।

Truth is not known to the individual; for he is self-estranged.

3. मायायि हुंज़ प्यठ छस थफा
करि गलती दियस ट्वफा।।

Since Maya has her strong hold on him, he is apt to be lead astray and get stung.

4. व्वथि नेंदरि तुलि व्वठा
छ़ांडुनि लगि येलि शफा
रामु रामु दियि क्रखा।।

This sharp sting shall shakingly awaken him one day. Leaving in the quest of Truth, he shall yearn for God.

5. होर योर दियि नज़रा
कैंहनो लग्य्स पता।।

While looking around, he can't get the answer.

6. येलि पेयस अन्दर नज़रा
गारनि लगि मनु मन्दरा।।

Forsaking outward search, he will be urged to look within the sacred shrine of the mind.

7- करुनि लगि येलि मनस सफा।
डेंशि वासनायन हुंद मला।।

Confronting the impure desires and habits of the mind, he will go in for internal purification.

8. लगि ध्यानु धारनाये।
गलनि लगुनस वासनाये।।

Consequently he will be urged to meditate. With meditation, Vasana's will tend to die.

9. व्वपद्यस ज्ञानु लूया।
शम्यस मन शाँती ब्बवे।।

Flashes of the self-knowledge shall take birth in the mind, to restore peace and serenity.

10. अहम हनि हनि गाले।
दय ब्रोंह ब्रोंह नेरे।।

With the total surrender of the ego, the immortal self shall shine forth.

11. ज़ीवुत येलि पूरु गले।
दयी योत म्वचि़ तेले।।

With the dissolution of individuality, the fullness of self-realisation shall come.

12. नज़र तस दूर पैये।
रोवमुत यियस अथे।।

The eye of the transedental knowledge shall open to regain the lost paradise.

13. द्वदस यान्य् थॅन्य यिये।
थॅन्य् तु द्वद पतु नो रले।।

By such a lightning of illumination, milk shall precipitate into butter - not to mingle with it any more.



त्राव यलु यि मन

Mind's natural state

मनुचि दारि बर वछु चुय त्राव।
अंतर बाहर भेद मॅशराव।।

'O' Yogi! open the doors and windows of your mind. Cherish no difference between the introverted and the extroverted condition of the mind.

एकांतुच चु लय त्रॉविथ व्वलसुनुक आनंद चु छाव।
पानु बेरंग ऑसिथ रंग रूपुक बहार चु छाव।।

Giving up the fondness for isolation and aloofness, be alive to the bliss of thy springing forth. Although being without any hue and colour, let the spring of thy shining forth blossom the flowers of colour and form.

यलु त्राव मन वुछ कौत गछ़े।
तस निश ब्योन क्याह छु तौत गछ़े।।

Leave the mind free and see where it does go even in its wildest flights. It can never go astray, for there is nothing which is not pervaded by God.

वारु वुछ मन पज़ि छुनु भटकान।
आत्मुहुक बनु ज़ांह छुनु त्रावान।।

See, if you at all know how to see rightly, the mind never goes astray for it never leaves the domain of Atman (The immortal self).

To actualise this state of mind in actual life, learn to link every happening in the world to God. And try to look at this world bereft of individual Vasanas by taking it as the divine pla of God.

मन ज़गतुच क्रिया करान।

क्रियायि मल आत्मॅहस छुनु लारान।।

World activity is done by the mind and purity or impurity of action never touches Atman.

आत्मा पानु प्रकाशवान।

कांह छ़ाय अथ निश छेनो दरान।।

Atman by its own nature is respledent (luminous). No shadow of any kind can stand before it.

क्रिया या अक्रियायि सृत्य केंह नो अथ

हुरान छूवनान।

क्रियायि मंज़ अक्रियायि हुंज़ अवस्था पानु

च़ुय प्राव।।

By action or inaction, Atman never gains or loses anything. Hence let us rise to the state of inaction in action.



संत छि वनान

What the saints say

1. पज़ि पज़ि मालि पॅज़िसुय वातख,
अपज़िस सुत्य छुय छ़ायन गिन्दुन।
सोरुय छुय चे़य ब्रोंहॅ कनि,
वन तु चे़य क्याह छय यछ़ा।।

Truthfullness shall take you to the ultimate truth; for untruthfulness is a play with Shadow. Both truth and untruth, immortality and mortality are before you; What then friend, is your wish?

2. दोह तु राथ पॅहरुदार रोज़ मनस,
युथ ना कुनि किन्य, फॅहली ज़हर।
कर दयि सुंज़ुय कल तय कहर।
श्वदी मन तु च़ली ज़हर।।

Day and night act as a sentinel of thy mind lest it gets poisoned by sensuous thoughts. Passionately long for God; for it shall cleanse your mind of all poison.

3. रेश्य अन्दरी कूरय कूरी,
वॉतिथ पेयी प्रकाशस्थान।
दुयी गॅलिथ अहम त्रॉविथ,

लोबहॅय तिमव अमरपान।।

Sages by self - Introspection could bore into their subliminal depths to establish their unity with the self-the effulgent Self. By Shunning the delusion of dualism and "I - consciousness" (in the empirical sense) they discovered their immortal self.

4. वीर नो मायायि नमान;
तिम छिनु अथ ब्रमान।
परम सतु तिमनुय ननान।

The truly brave do not bow to Maya (The enslaving force of Nature) and are never decieved by it. Transcedental Truth becomes known to them by God's grace.

5. ज्ञानुच ध्यथ थॅविथ,
प्रुछ्यॉम मायायि कैंह सवाल।
गलि ज़्यव गॅयस दवनि लज,
कैंह नो द्युतनम जवाब।।

Resting on the cushion of knowledge, I asked Maya some questions. But Alas! it stammered and ran away with out giving any reply.

6. ज़ीवो पान ज़ानुनुक सबक चु पर।
यी रैशव उतम ज़ोनहोय ती चु कर।।

'O' individual, read the book of self-knowledge - the king of all sciences. Do whatever Rishi's asked you to do.

7. सोऱ्य सोऱ्य अँदरी नेरी चे़ जवहर।
डींशित च़ली दय ज़ानुनुक शर।।

By self - enquiry, a pearl shall come to your sight; seeing which thirst for God realization shall get quenched.

8. योहोय अमर पान यॆलि गछ़ी चे़ सरु।
ज़न्मु ज़न्मन हुंद च़ली मरु मरु।।

By knowing this Immortal Self, the fear of death shall vanish.

9. ज़ीवो दयि सुन्द दूर्यर मॅशराव।
दय सुंद सर्वव्यापक रूप प्रज़नाव।।

'O' embodied being forget the idea of separation from God; for He is all - pervading and omnipresent. Thus try to recognise and feel Him.



शिव शक्ति लीला

(कशमीर शैवमत के ३६ तत्वों के क्रम में)

The Hymn to Shiva - Shakti

परम शिव, शिव

परम शिव शिव—शक्ति मॉज भगवॅती,
दिम पनुन्य् भॅक्ती कासुम सखती।
हाव पनुन्य् युवक्ती मॉज भगवॅती।।
परम शिव—शिव शक्ती मॉज भगवॅती।।०।।

Parem Shiva, Shiva Shakti, thou art the Mother divine. Grant me thy devotion, remove all obstacles and show thy Might.

परा शक्ती

चॖय परा शक्ती आनंद रूपिनी,
चॖय मूल प्रकृती मॉज भगवॅती।
छक ज़ीवु प्रकृती मॉज भगवॅती,
दिम पनुन्य् भॅक्ती कासुम सखती।
हाव पनुन्य् युवक्ती मॉज भगवॅती।।०।।

Thou art the Transcedental super-energy of the nature of absolute bliss. Thou art the root energy of the universe and the ordinary nature of the embodied.

इछा, ज्ञान, क्रिया शक्ती

च़ुय इछा शक्ती, च़ुय ज्ञान शक्ती,
छक क्रिया शक्ती मॉज भगवॅती।
दिम पनुन्य् भॅक्ती कासुम सखती।।
हाव पनुन्य् य्वक्ती मॉज भगवॅती।।०।।

Thou art the power of universal vclition, all encompasing knowledge again thou art the universal power of execution.

सृष्टि, स्थिति, संहार

ब्रह्मारूपी शक्ती, छख करान सृष्टी,
विष्णु रूपु शक्ती छ़ख करान स्थिति।
संहार शक्ती मॉज भगवॅती,
दिम पनुन्य् भॅक्ती कासुम सखती।।
हाव पनुन्य् य्वक्ती मॉज भगवॅती।।०।।

In the form of Brahma, though art responsible for the creation of the world. In the form of Vishnu, the world is sustained by thee and again thou taketh the form of world-destroying power.

निग्रह, अनुग्रह

माया रूपी शक्ती छख शिवस खटान,
अनुग्रह रूपी छख नॅनिरावान।
छख स्व शक्ती मॉज भगवॅती,

दिम पनुन्य् भॅक्ती कासुम सखती।।
हाव पनुन्य् यवक्ती मॉज भगवॅती।।० ।।

In the grab of Maya, Shiva, the ultimate Truth is concealed by thee but in the form of Divine grace thou revealth the ultimate truth Shiva). Again thou art the independent sovereign power.

त्रे गुण

गुणमय गुणातीत छख च़ुय शक्ती पीट,
शिव सुंज़ शक्ती मॉज भगवॅती।
दिम पनुन्य् भॅक्ती कासुम सखती।।
हाव पनुन्य् यवक्ती मॉज भगवॅती।।० ।।

Thou art the energy in the form of three Gunas or mental moods and thou the ruling power above these Gunas, Thou art the concious power of Shiva.

मन, ब्वदि, अंहकार

मन, ब्वदि, अंहकार छुय चोन चमत्कार,
संकोच शक्ती मॉज भगवॅती।
दिम पनुन्य् भॅक्ती कासुम सखती।।
हाव पनुन्य् यवक्ती मॉज भगवॅती।।० ।।

Manifestation of the mind, intellect and ego are the wonder of your power. Thou art the all limiting power.

पंचज्ञान, पंचकर्म इन्द्रेय

च़ुय पंचज्ञान पंच कर्म इन्द्रेय,
पंच प्राण शक्ती मॉज भगवॅती।
दिम पनुन्य् भॅक्ती कासुम सखती।।
हाव पनुन्य् य्वक्ती मॉज भगवॅती।।० ।।

Thou art power behind the five senses and the five powers of action. Again, thou art the fivefold prana Shakti (vital force) in the human being.

पंच तन्मात्र, पंच महाभूत

च़ुय पंच महाभूत, पंच तन्मात्रय,
मंत्र शक्ती मॉज भगवॅती।
दिम पनुन्य् भॅक्ती कासुम सखती।।
हाव पनुन्य् य्वक्ती मॉज भगवॅती।।० ।।

Thou art the five subtle and the five gross elements and thou the power in a mystic sound formula.

वैखुरी

च़ुय परा पशन्ती मध्यमा वैखुरी,
ॐ शब्द ब्रह्मणी मॉज भगवॅती।
दिम पनुन्य् भॅक्ती कासुम सखती।।
हाव पनुन्य् य्वक्ती मॉज भगवॅती।।० ।।

Thou art the four stages of the manifestation of articulate speech. Again, thou art the source of primal sound 'OM'.

‘कुडंलिनी’

ज़ुय मूलादारची कुडंलिनी शक्ती,
ज़ुय सुशिम्नायि मंज़ क्रीडावॅती।
सहसरारस मंज़ अमृत — सुरूपनी।।
महा ज्योत स्वरूपनी मॉज भगवॅती,
दिम पनुन्य् भॅक्ती कासुम सखती।।
हाव पनुन्य् य्वक्ती मॉज भगवॅती।।० ।।

Thou art the concealed serpent power at the base of the spine. Thou art responsilbe for her play in the central sushumna channel.

Thou art the very form of nectar in the spiritual centre at the crown of the head. Again thou art all effulgence.

महा माया

निराकारस आकार छुय चोन विलास,
महामाया शक्ती मॉज भगवॅती।
दिम पनुन्य् भॅक्ती कासुम सखती।।
हाव पनुन्य् य्वक्ती मॉज भगवॅती।।० ।।

The manifestation of form out of the formless is one of your miraculous powers. Thou art unknowable power, my obeisance to thee.

पृथवी

पृथवी रूप दॉरिथ छख प्रत्यक्ष माता,
सीनस प्यठ जीवन छख ललुनावान।
अन तय फल दिथ छख अन्नपूर्णा,
गंगा स्वरूपिनी मॉज भगवॅती।।
दिम पनुन्य् भॅक्ती कासुम सखती।।
हाव पनुन्य् य्वक्ती मॉज भगवॅती।।० ।।

Assuming the form of the Earth, thou art the most evident form of the Divine Mother. Embracing all living beings and holding them to your breast, Thou feeds them with cereals and fruits as "Anna Purna".

Assuming the form of the sacred Gangas, Thou art the perennial source of water.

गुरु

च़ुय ॲनिस भक्तिस गुरु श्रेष्ट—दिवान,
च़ुय गुरु सीवाय तस लागान।
शक्ति पातस ग्वरुस प्रेरित छख करान,
च़ुय गुरु मूरती मॉज भगवॅती,
दिम पनुन्य् भॅक्ती कासुम सखती।।
हाव पनुन्य् य्वक्ती मॉज भगवॅती।।० ।।

'O' Mother it is you, who choses and bestows, a competent Guru on the ignorant and searching devotee. It is by Thy grace alone that the devotee gets the chance to serve the Guru. Again, you assume the role of the Guru's form for the devotee and inspire the Guru to exercise his mystic power over the devotee.

चक्रेश्वरी

चु़य हॉरी पर्बतच च़क्रश्वरी,
चु़य त्रिकूट पर्वतच छख वैशनवी।
चु़य जवाला देवी, नयना देवी,
शाकम्बरी मॉज भगवॅती,
दिम पनुन्य् भॅक्ती कासुम सखती।।
हाव पनुन्य् य्वक्ती मॉज भगवॅती।।०।।

O Mother, you revealed yourself in the form of "Chakreshwari" (the Mystic Symbol of creation) on the Hariparbhat hill of Kashmir.

You revealed yourself on Trikuta hills as Vaishnavi and in Jawala Devi, Naina Devi and Shakambari shrines. Bestow Thy uninterrupted devotion on me.

तत्व वर्क्ष

ज्ञान शक्ति समारूढं तत्व माला विभूषितम्।
भुक्ति मुक्ति प्रदातारं तं गुरुं प्रणमाम्यहम्।।

(श्री गुरुगीता)

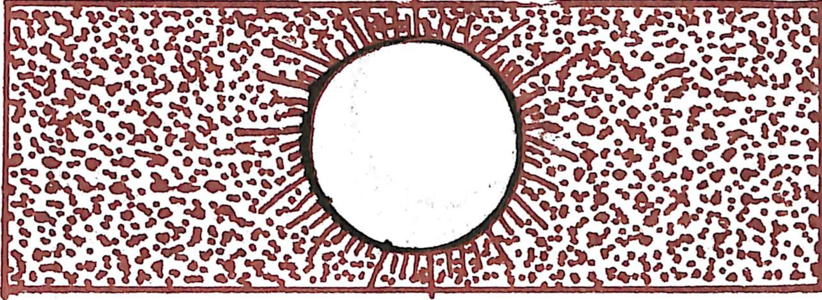
I bow to the Guru, who mounts the energy coming from knowledge; wears the elements as if in a garland and bestows worldy prosperity as well as liberation.

कश्मीर शैव दर्शन के 36 तत्वों का वर्णन

The chart of Cosmology according to Kashmir Shaivism or The flowchart of creation

SPECIAL FEATURES

PAREM SHIVA — परम् शिव



(प्रकाश विमर्शमयी)

a) Supreme self of Pure consciousness surveys itself.
b) It is transcendental and extra cosmic Reality.
c) This pure SUN of consciousness called Parem Shiva has non-relational and immediate awareness of I.

'I' and 'This' aspect of conciousness are in indistinguishable unity.

d) It rests in its own self-created highest kind of void.

The Shrimad Bhagvad Geeta also says :

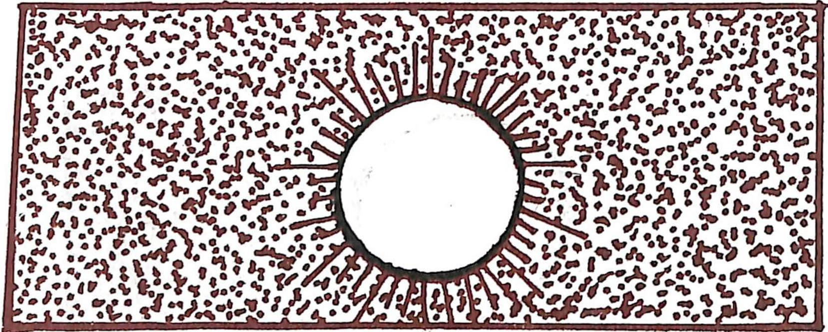
उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः परमात्पेत्युदाहृतः।
यो लोकंत्रयमाविश्य बिंभर्त्यव्यय ईश्वरः।।१७।।

The supreme person is yet other than these who having entered all the three worlds upholds and maintains all and has been spoken of as imperishable Lord and the supreme spirit.

परस्तस्मात्तु भावोऽन्योऽव्यक्तोऽव्यक्तात्सनातनः।
यः स सर्वेषु भूतेषु नश्यत्सु न विनश्यति।।२०।।

Far beyond even this unmanifest there is yet another unmanifest existence, that Supreme Divine Person who does not perish even thou all beings perish.

SHIVA — शिव



(चितभानू)

a) SHIVA is the changeless principle of all changes.
b) By its shining every thing else shines.
c) Intra-Cosmic, Immanant Reality supporting dynamic energy in the background.

d) Pure witness consciousness of the mind.
e) Container of everything.

The Shrimad Bhagvad Geeta also says :

यस्मात्क्षरमतीतोऽहमक्षरादपि चोत्तमः।

अतोऽस्मि लोके वेद च प्रथितः पुरुषेत्तमः।।१८।।

Since I am wholly beyond the perishable world of matter or Ksetra and I am superior to the imperishable soul, hence I am known as the Purshotma in world as well as in the Vedas.

न तद्भासयते सूर्यो न शशङ्को न पावकः।

यद्गत्वा न निर्वतन्ते तद्धाम परमं मम।।

Neither the Sun nor the moon nor even fire can illumine that supreme self effulgent state attaining to which they never return to this world. That is my supreme abode.

SHAKTI — शक्ति



(आनन्द)

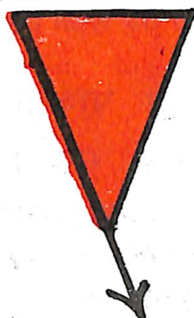
a) The dynamic energy aspect of Shiva as his I-conciseness.
b) If Shiva is the container, what is contained there in is His Shakti.
c) The sovereign power to create.
d) Absolute bliss is her essential nature.

The Shrimad Bhagvad Geeta also says :

मत्तः परतरं नान्यत्किञ्चिदस्ति धनञ्जय।
मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव।।७।।

There is nothing else besides me Arjuna. Like clusters of yarn beads formed by knots on a thread, all this is threaded on me.

SADASHIVA — सदा शिव



(ईच्छा)

a) The Sadashiva has the power of will to create.
b) In its experience as 'I' am this. The 'This' side i.e., the universe to be is quite hazy.

ISHWARA -- ईश्वर



(ज्ञान)

a) The power of knowledge is prominent here as 'This' side of 'This am I' consciousness is quite distinct.

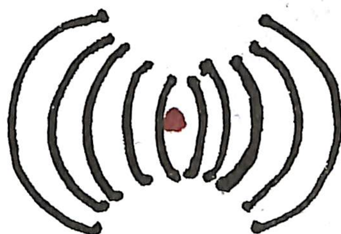
SHUDHVIDYA — शुद्ध विद्या



(क्रिया)

a) The power of assuming every form.
b) 'I' and 'This' are quite distinct and prominent but 'This' is still felt as part of self.

MAYA — माया



a) The principle of delimitation; contracting infinite into finite.
b) The make believe power of Nature, excluding 'This' said of experience from 'I' side of universal

experience, thus giving the feeling of diversity in unity.

c) Maya draws a veil over the self owing to which he forgets his real self. The five products of Maya are :

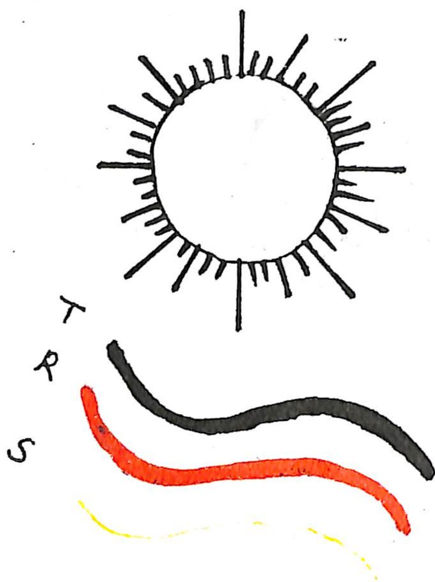
(i) Kala (ii) Vidya (iii) Raga
(iv) Kaal (v) Niyati

The Shrimad Bhagvad Geeta also says :

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।
भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया।।६१ ।।

Arjuna, God abides in the heart of all creatures, causing them to revolve according to their Karma by His illusive power, seated as those beings are in the vehicle of the body.

PURUSHA & PRAKRITI — पुरुष और प्रकृति



Shiva under the influence of Maya and her Kanchukas loses his universal nature and becomes a limited individual soul.

Subjective side of Shiva under the influence of Maya is Purusha and its objective side is Prakriti.

ममैवांशो जीवलोके जीवभूत: सनातन:।
मन:षष्ठानीन्द्रियाणि प्रकृतिस्थानि कर्षति।।७।।

The eternal; Jivatma in this world is a particular of my own being and it is that alone which draws around itself the mind and the five senses which rest in Prakrati.

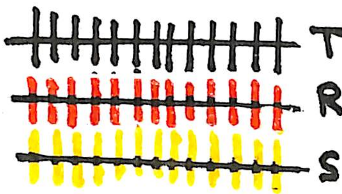
द्वाविमौ पुरुषौ लोके क्षरश्चाक्षर एव च।
क्षर: सर्वाणि भूतानि कूटस्थोऽक्षर उच्यते।।१६।।

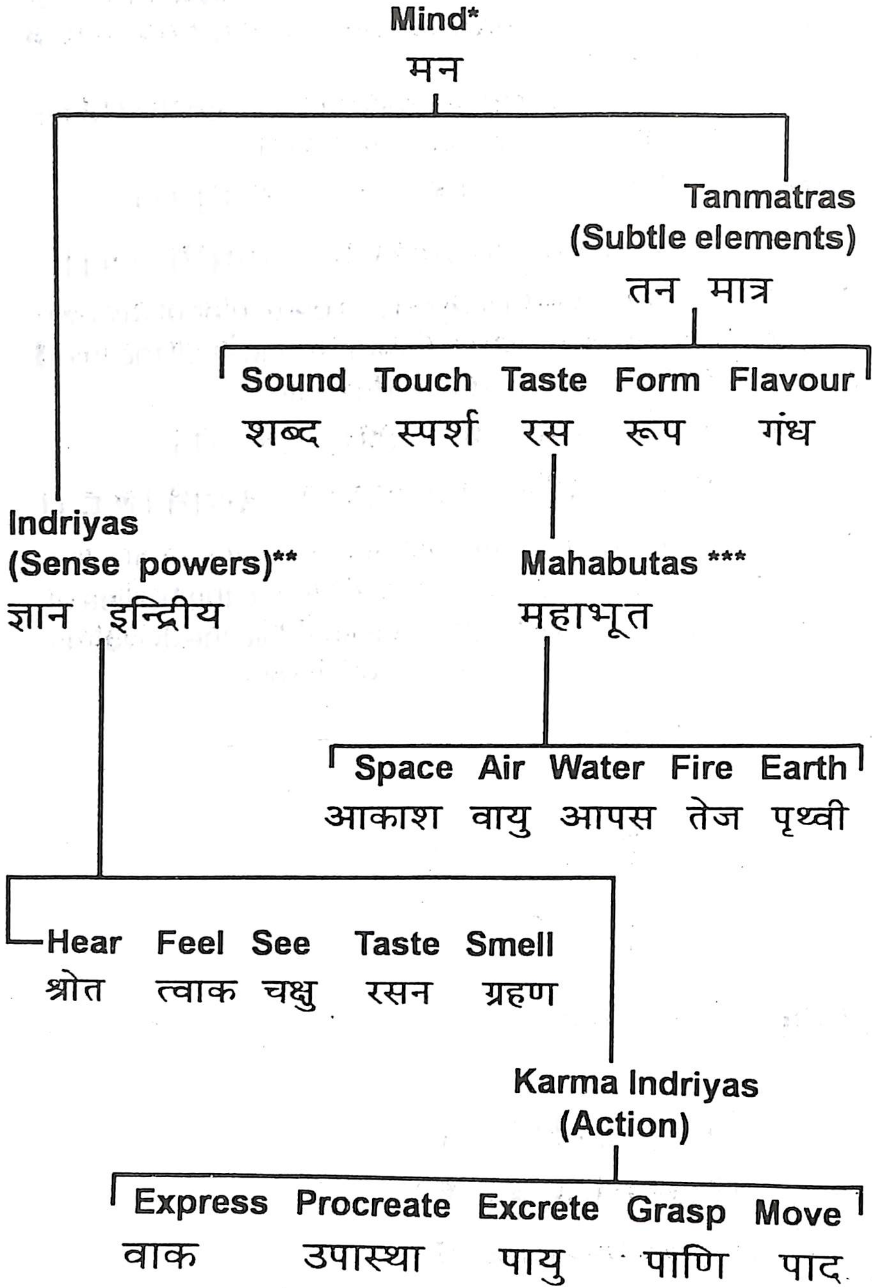
The perishable and the imperishable too - these are the two kinds of Purushas in this world. Of these the bodies of all being is spoken of as the perishable. While the Jejvatma or the embodied soul is called imperishable.

Ego — अंहकार



Intellect — बुद्धि




Mind*
मन
Tanmatras
(Subtle elements)
तन मात्र
Sound Touch Taste Form Flavour
शब्द स्पर्श रस रूप गंध
Indriyas
(Sense powers)**
ज्ञान इन्द्रीय
Mahabutas ***
महाभूत
Space Air Water Fire Earth
आकाश वायु आपस तेज पृथ्वी
Hear Feel See Taste Smell
श्रोत त्वाक चक्षु रसन ग्रहण
Karma Indriyas
(Action)
Express Procreate Excrete Grasp Move
वाक उपास्था पायु पाणि पाद

The above Chart of Cosmology according to Kashmir Shaivism

Brief Description :

The above chart of universal Manifestation helps us to understand the Projection of this universe of Name and form constituting of 36 elements which include the 5 Tatvas of Earth, Water, Air, Fire and Space, from Transcendental reality that is "Vishiwa Teeran Parem Shiva" as per Kashmir Shaivistic philosophy. To understand this big tree of Manifestation along with its essential elemental features, let us consider the illustration of an architect who wants to construct a house for his residence. To realise this dream of construction of the house, the said architect has to pass through three distinct psycological processes:

1. **Desiring (Iccha Shakti) :** The said architect has to cherish the desire for the said construction in his mind and thus generate Iccha Shakti to accomplish the task.
2. **Conceiving the plan with the design (Gyana Shakti):** Subsequently the architect has to visualize the plan, design and other details of the would-be house thus bringing into play his Gyana Shakti.
3. **Execution (Kriya Shakti) :** The said architect has to bring into play his executive will i.e., Kriya Shakti to give practical shape to his desire (Iccha) and Knowledge (Gyana). Like wise, to manifest this world out of himself, Parem Shiv brings forth Shiva and Shakti Tattvas who in turn bring forth Sada Shiv Tattva representing Universal Volition ie., Iccha Shakti, Ishwara Tattva (representing universal knowledge i.e. Gyana Shakti and Shud Vidya Tattava (representing universal power of action i.e., Kriya Shakti).

Thus Shiva manifests this universe out of Himself

owing to His Swatantra Shakti and Himself remains as its Lord. We exist, think and walk in Shiva itself. The relevant verses (Sholakas) from Shrimad Bhagvad Gita have been quoted to explain the Tattava and in turn the Shalokas are illustrated by the Chart. One more essential element in existence i.e., Maha-Prana Shakti needs to be depicted between Mind & Body (contituting of five elements) which has been surprisingly not included by Shaiva Acharyas of Kashmir.

The practical utility of the above chart, depicting the different constituent Tattavas (i.e. Building Blocks) of this universe, is to enable the aspirants to visualize and understand the different steps of spiritual evolution and throw light on the different tattavas, they need to pass through and transcend while climbing the ladder of spiritual evolution.

It shall be a mistake to presume that the above chart is the result of mere speculation of the Shiva Acharyas. The fact remains that the above chart is the result of actual spiritual experiences which Shaiva saints have undergone during unfolding of conciousness. Further above chart has been depicted to promote further research in Kashmir Shaivism.

"May Lord Shiva Bless us all"

---

* इन्द्रियाणि पराण्याहुरिन्द्रियेभ्य: परं मन:।
मनसस्तु परा बुद्धियों बुद्धे: परतस्तु स:।।४२।।

The senses are said to be greater than the body; greater than the senses is the mind. Greater than the mind is the intelllect and what is greater than the intellect is He the self.

** श्रोत्रं चक्षुः स्पर्शनं च रसनं घ्राणमेव च।
अधिष्ठाय मनश्चायं विषयानुपसेवते।।

It is while dwelling in the senses of the hearing, sight, touch, taste and smell as well as in the mind. This Jivatama enjoys the objects of senses.

*** भूमिरापोऽनलो वायुः खं मनो बुद्धिरेव च।
अहंकार इतीयं मे भिन्ना प्रकृतिरष्टधा।।४।।
अपरेयमितस्त्वन्यां प्रकृतिं विद्धि मे पराम्।
जीवभूतां महाबाहो ययेंद धार्यते जगत्।।५।।

Earth, water, fire, air, ether, mind, reason and also ego these constitute my nature eight fold divided. This indeed is my lower (material) nature; the other than this by which the whole universe is sustained, know it will be My higher (or supiritual) nature in the form of Jiva, (the life principle). O Arjuna.



ॐ शान्ति ॐ



ADDENDA

देवी भगवती और भगवान जी

(Mother Goddess And Bhagwan Ji)

तीन लोकों की राजरानी, जय माँ वैष्णों भवानी।
जय माँ वैष्णों भवानी, जय माँ दुर्गा भवानी।।

जय माँ शारिका भवानी, जय माँ रागिन्या भवानी।
जय माँ ज्वाला भवानी, जय माँ रूपा भवानी।

परम शिव की शिवानी, जय माँ दुर्गा भवानी।
भक्तों की तुम कल्याणी, दर्शन दे माँ भवानी।।

गुफा में आसन लगाई, बान गंगा चरणों में धारी।
तुम त्रिकुट पर्वत वासी, हे माँ अधकुँवारी।।

इन होठों पर तेरी हँसी, है माँ त्रिपुर सुन्दरी।
शेर है वाहन सवारी, भक्तों की तुम कल्याणी।।

जम्मू नगरी में तेरी, माँ निरंतर ज्योत जगती।
लोक रक्षा में लगी, हे महा ज्योत स्वरूपी।।

सतगुरु की इच्छा से माँ देवी आँगन में प्रकटी।
सतगुरु की गोद में बैठी, कन्या रूपी माँ भवानी।।

सतगुरु के हाथों से खाई, प्रेम का भोग भवानी।
भक्तों की लाज रख ली, हे माँ अनुग्रह कारिणी।।

भक्त माधव धर के घर माँ, कन्या रूपी जन्मी।
बर्तन क्षीर की भर दी, हे माँ अन्नपूर्णी।।

स्वप्नों में श्रीधर के आयी, गुफा के दर्शन कराई।
लोक यात्रा खोल दी, हे जग कल्याणी।।

दृष्टि में तेरी जो आये, पूर्ण शुद्धी वो पाये।
तुम काम क्रोध मर्दनी, हे शक्ति कुँडलिनी।।

भैरव अभिमानी की, अन्तिम इच्छा पूरी कर दी।
चरणों में भैरव समाई, हे माँ क्षमाश्वरी।।

शब्द ध्वन की तुम रानी, है माँ शब्द ब्रह्मणी।
हर जीभ पर तुम हो वाणी, हे माँ परावाणी।।

तुम ही हो महासरस्वती, तुम ही हो महालक्ष्मी।
तुम ही हो महाकाली, तीन पिंड रूप माँ भवानी।।

तुम सतगुरु की इष्ट देवी, कष्टों की तुम निवारिणी।
मुक्ति उनको दिलाई अपने समीप माँ भवानी।।

तुम शिव की परा शक्ति, आनन्द स्वरूप माँ भवानी।
भक्तों की अनुग्रह कारिणी, हे माँ अमृत स्वरूपी।।

तुम शिव की इच्छा शक्ति, तुम ही हो ज्ञान शक्ति।
हर योगी में तुम प्रकटी, आनन्द स्वरूप माँ भवानी।।

तीन कारणों की शक्ति, तुम ही हो महा गायत्री।
कलियुग में तुम प्रकटी, युग शक्ति माँ भवानी।।



अनमोल साँसें
(The Precious Breath)

1. हर साँस तेरा है अनमोल, जय जय गुरूदेव की बोल।
मन–रूप पतंग की यह डोर, कस ले साँसों को पुरज़ोर।।

2. तेरे बिखरे हैं साँस मत डोल, सुनले सोऽहम सोऽहम के बोल।
अजपा गायत्री के हैं यह बोल, जप ले सोऽहम सोऽहम के बोल।।

3. झूठा संसार, झूठे हैं इसके बोल, ध्यान करले गुरू चरणों की और।
गुरू भक्ति के द्वार तू खोल, जय जय गुरू देव की बोल।।

4 गिने हैं तेरे साँस मत तोड़, तू साँसों की मत लगा दौड़।
धीरे कुम्बक कर फिर साँस छोड़, जय जय गुरू देव की बोल।।

5 ह्रदय अपना पूरा तू खोल, हर बात गुरूदेव की बोल।
पाप और पुण्य को मत तोल, सिर झुका गुरू चरणों की ओर।।

6 प्रभु भक्ति से नाचे प्राण मोर, उड़ जाये ब्रह्मांड की ओर।
ईश्वर से मिलाए प्राण डोर, जय जय गुरू देव की बोल।।

7. "सू" है ईश्वर "अहम" है जीव, गुरूदेव सँवारे तकदीर।
चलो परमधाम की और, जय जय गुरूदेव की बोल।।



करुणा के अवतार कौन ?

1. करूणा के एक ही अवतार हैं, केवल भगवान शंकर।
भगवान शंकर, हे महेश्वर, भक्तों के पाप हर ले ऐ हरिहर।।

2. हे गंगाधर, हे भस्माधर, श्री राम के हो रामेश्वर जय शिवशंकर।
करूणा के एक ही अवतार हैं केवल भगवान शंकर।।

3. कपूर श्वेत रंग के कैलाशपति, नागों के हैं नागेश्वर, हे दिगम्बर।
करूणा के एक ही अवतार हैं केवल भगवान शंकर।।

4. बर्फ बियाबान में फिरते हैं भगवान हिमावती के हिमावान, गौरी शंकर।
करूणा के एक ही अवतार हैं केवल भगवान शंकर।।

5. पाप नाशक मुक्तिदायक, अमरनाथ के स्वामी हे अमरिश्वर,।
करूणा के एक ही अवतार हैं केवल भगवान शंकर।।

6. कोमल लिंग स्वरूप प्रकटे महेश्वर, अमर गुफा के अंदर, जय शिवशंकर।
करूणा के एक ही अवतार हैं केवल भगवान शंकर।।

7. बर्फ लिंग आकार प्रकटे निराकार, बोली बोलते कबूतर, जय शिवशंकर।
करूणा के एक ही अवतार हैं केवल भगवान शंकर।।

8. शिव यात्रा को निकले सतगुरू, थक के बोले कहां बस गये, हे शिवशंकर।
करूणा के एक ही अवतार हैं केवल भगवान शंकर।।

9. आहुती बार बार डाली सतगुरू ने, आपत्ति टाल दी भयंकर, जय शिवशंकर।
करूणा के एक ही अवतार हैं केवल भगवान शंकर।।

10. गुफा के सामने बैठे सत् गुरू, धूनी तपा कर बोले जय शिव शंकर।
करूणा के एक ही अवतार हैं केवल भगवान शंकर।।

11. ध्यान मगन हो गये सत् गुरू, सनमुख देखे वह आदिगुरू, भगवान शंकर।
करूणा के एक ही अवतार हैं केवल भगवान शंकर।।

12. माया भ्रम से वह पार कराते, त्रिपुरा के त्रिपुरारी उमा शंकर।
करूणा के एक ही अवतार हैं केवल भगवान शंकर।।

13. सब रूद्रों में श्रेष्ठ हैं शंकर, अष्ट भैरवों में आनंदेश्वर जय शिव शंकर।
करूणा के एक ही अवतार हैं केवल भगवान शंकर।।

14. कण्ठ में विष रोका विश्व मन का, नाम नीलकण्ठ पड़ा तेरा हे शिव शंकर।
करूणा के एक ही अवतार हैं केवल भगवान शंकर।।

15. हे ज्ञानेश्वर, हे त्यागेश्वर, ध्यानियों में हो ध्यानेश्वर हे शिव शंकर।
करूणा के एक ही अवतार हैं केवल भगवान शंकर।।

16. भक्त खाली नहीं लौटा कोई, शिव द्धार से हे कृपालु, गौरी शंकर।
करूणा के एक ही अवतार हैं केवल भगवान शंकर।।

17. देवों के हो देव हे महादेव, महादेवी के महादेव, गौरी शंकर।
करूणा के एक ही अवतार हैं केवल भगवान शंकर।।

18. गुरू गीता देकर, कर लिया कल्याण भक्तों का तुम ने भगवान आदिगुरू शंकर।
करूणा के एक ही अवतार हैं केवल भगवान शंकर।।

